आज सवाल है

1. आपके घर में

दावत पर आये लोगों के सामने, भोजन के बाद क्या आप अपने नौकर या नौकरानी का परिचय मेहमानों से कराते हैं?

नहीं।

जी सच कहा आपने।

रसोई के कोने में वो इस तरह बैठी रहती है कि कहीं कोई उसे देख न ले सुन न ले। धीमे बोलती है। उसके मैले कपड़ों पर, या उसके थके हारे चेहरे पर कहीं उनकी नजर न पड़ जाए।

यही सेवक, नौकर, नौकरानी की परिभाषा है।

स्वादिष्ट भोजन है, घर चमक रहा है, कपड़े साफ हैं सब एकदम बढ़िया है, लेकिन नौकरानी का कोई पता नहीं। न घर वालों ने न ही मेहमानों ने उसे जानने या पहचानने की कोशिश की।

सेवक दिखाई नहीं देता है, नम्र और दीन होता है। बस उसके काम दिखते हैं।

''क्योंकि बड़ा कौन है? वह जो भोजन पर बैठा है, या वह जो सेवा करता है क्या वह नहीं जो भोजन पर बैठा है? परंतु मैं तुम्हारे बीच में सेवक के समान हूँ।'' लूका 22:27

प्रभु यीशु ने जब कहा कि मैं सेवा करवाने नहीं, सेवा करने आया हूँ, तो वो इंसान ही नहीं बना, हमारा नौकर या सेवक बना।

लेकिन साथ ही साथ उसने हमारी गालियां खाईं, अपमान सहा, हमने उसके मुंह पर थूका, और उसे थप्पड़ मारे, उसे खदेड़ते हुए शहर के बाहर तक ले गए, उसे मार पीट कर अधमुआ करके क्रूस पर चढ़ा कर उसकी हत्या कर दी।

और कहते हैं, हमारा सेवक था?

''मनुष्य का पुत्र इसलिए आया कि दूसरों की सेवा टहल करे। और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे।'' मत्ती 20:28

आज सवाल है–

यदि हम प्रभु यीशु के हमशक्ल हैं, सेवक हैं, तो क्या हमारा भी अनुभव कुछ ऐसा ही है?

2. आपके चर्च के बारे में

प्रभु यीशु ने कुछ कहा है।
प्रभु यीशु के स्वर्ग जाने के बाद 'चर्च युग' चालू होता है।
इसके पहले, हमारे व्यक्तिगत जीवन, मुक्ति और गवाही के बारे में तो उसने धरती पर रहते हुए हमें सब बता ही दिया था।
तो चर्च के बारे में वो हमसे बाइबिल की आखिरी किताब प्रकाशितवाक्य में क्या कहता है?
सुनिए–सात चर्च हैं?
सब अलग-अलग स्वरूप के कुछ समानता कुछ विभिन्नता।
(इफिसुस, स्मुरना, पिर्गमुन, थुआतीरा, सरदीस, फिल्दिल्फिया, लौदीकिया)
ये सात चर्च 'हर युग' में मौजूद रहते हैं।
''और इसमें से एक चर्च आपका है''
सातों चर्च से प्रभु ने 'एक ही जैसी' (common) बात क्या कही?
1. यदि कान हैं तो सुन लो, सातों से कहा (यानी–मेरे कहे को पूरा करो)
2. जय पाना होगा, सातों से कहा–(किस पर? हमारे झूठ, लालच, घमंड, स्वार्थ, धन, और शैतान की परीक्षाओं पर)
3. सातों चर्च में से एक से भी उसने सांसारिक आशीषों का न वादा किया न जिक्र किया।
(तो आज आपका चर्च किन सांसारिक आशीषों की मांग कर रहा है?)
नीचे निर्देश (reference) दिए हैं
'कान हैं?' प्रका. 2:7; 2:11; 2:17; 2:29; 3:6; 3:13; 3:22 (सातों से)
'जय पाना होगा?' प्रका. 2:7; 2:11; 2:17; 2:26; 3:5; 3:12; 3:21 (सातों से)
'सांसारिक आशीषें देना का वादा नहीं किया?' प्रका. 2:7; 2:11; 2:17; 2:28; 3:5; 3:12; 3:21 (सातों से)
आज सवाल है–
आपका चर्च कौन सा है?
कान हैं? जयवंत है? सांसारिक आशीषों के पीछे तो नहीं पड़ा?

3. आपकी जिंदगी पर किसी ने किताब लिखी है

आपके अंदर एक 'किताब' है।

उस किताब की एक भाषा है, उसको DNA कहते हैं और शब्दों को जीन्स (Genes)-अक्षर को पेप्टाइड्स (Peptides) कहते हैं।

''तेरी आँखों ने मेरे बैडोल तत्व को देखा, और मेरे-'सब अंग' जो-'दिन दिन'-बनते जाते थे वे 'रचे जाने से पहले' तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे''-भजन संहिता 137:16

हमारे शरीर के अंग (part) और उनके कार्य (function) पर किताब लिखी गयी है। क्या मेरे जीवन की किताब का लिखने वाला सर्वशक्तिमान - जीवित परमेश्वर नहीं। हमें जीवन देने वाला सर्वबुद्धिमान परमेश्वर क्या निर्जीव हो सकता है? या कोई बड़ा धमाका (big bang) हो सकता है?

तो फिर ये क्छ। है क्या (Deoxy ribonucleic acid), ये किस तरह की भाषा है?

हमारा शरीर, या कोई भी जीवित प्राणी हो या पेड़ पौधे हों वे सबसे छोटे अंग, याने सेल से बने होते हैं। ये आंखों से सीधे नहीं दिखते हैं। पर शक्तिशाली माइक्रोस्कोप से देखे जा सकते हैं।

सेल (Cell) की रचना (structure) - चाहे मनुष्य की हो, या पौधे की हो या जानवर, पक्षी या मछली की हो, करीब एक जैसी ही दिखाई देती है।

सेल (Cell) के अंदर एक रस्सी या सीढ़ी (double helix) की तरह इसमें एक भाग (part) है जिसे क्रोमोजोम कहते हैं। मनुष्य के शरीर की सेल में 46 क्रोमोसोम होते हैं और ये DNA से बना है।

समझने के लिए, Chromosome के अंदर एक DNA होता है जिसकी लंबाई अधिक होती है पर एक coil के रूप में सीड़ी की तरह chromosome के अंदर टाइट पैक होता है।

DNA की बनावट Peptides के लाइन से जुड़ने से बनती है।

DNA में जुड़े peptides की अलग-अलग sequence और length को Genes कहते हैं। और ये genes एक code हैं (या कहें एक भाषा के शब्द हैं) जिसके द्वारा शरीर के अंगों की बनावट और कार्य (function) निर्धारित होते हैं।

मनुष्य के शरीर के DNAs को एक लाइन में रखेंगे तो पृथ्वी से सूर्य तक का फासला (14.96 करोड़ Kms) कई बार पूरा होगा।

ये ''हमारे जीवन की किताब'' (book of physical life) की भाषा है। इसमें हमारे शरीर के हर अंग को कैसा बढ़ना चाहिए और क्या-क्या कार्य करना चाहिए निर्देश है।

संसार में हर जीव का DNA - unique होता है। और उससे उसकी शिनाख्त की जा सकती है।

आंख का रंग काला, नीला, हरा, बाल का रंग, ऊंचाई, शक्ल और हमारी पहचान, और हर, जीव, पक्षी, कीड़े, पौधे की खास पहचान होती है।

इसी तरह परमेश्वर द्वारा लिखी कुछ और किताबें भी देखें जो हमें उस आत्मिक संसार में देखने और सुनने को मिलेंगी जब हम परमेश्वर के न्याय आसन के सामने खड़े होंगे। लिखा है,

''फिर मैंने छोटे बड़े सब मरे हुओं को सिंहासन के सामने खड़े हुए देखा, और पुस्तकें (books) खोली गयीं, और फिर एक और पुस्तक (another book) खोली गई अर्थात जीवन की पुस्तक और जैसे उन पुस्तकों में लिखा हुआ था, उनके कामों के अनुसार उन का न्याय किया गया।''

''और जिस किसी का नाम जीवन की पुस्तक में लिखा हुआ न मिला, वह आग की झील में डाला गया'' प्रकाशितवाक्य 20:12, 16

स्वर्गलोक (आत्मिक लोक) में, जो हर इंसान के कर्मों और धार्मिकता का हिसाब रखने वाली किताबें हैं। न्याय के समय हर इंसान के आत्मिक जीवन की अपनी किताब भी खोली जाएगी।

जिसको पढ़कर मालूम पड़ेगा, क्या हमने परमेश्वर की आज्ञा मानी, क्या पाप मोचन प्राप्त किया, इत्यादि कुछ भी परमेश्वर से छिपा नहीं है।

आज सवाल है–

आपके आत्मिक जीवन की किताब में क्या लिखा है?

क्या आपका भविष्य सुरक्षित है?

4. आग लगवा दी थी परमेश्वर ने

अपने यरूशलेम के मंदिर में,

बाबुल के राजा नेबुकदनेजर ने परमेश्वर का भवन फूंक दिया। और सारा खजाना, सोने के मंदिर के पात्र लूटकर बाबुल ले गया। यरुशलम की शहरपनाह को तोड़ डाला और उसके भवनों को जलाया।

किसने करवाया ये काम? परमेश्वर ने क्यों किया?

इसलिए कि यहूदा के राजाओं ने और लोगों ने वह काम किये जो परमेश्वर कि दृष्टि में बुरे थे, और उसकी आज्ञा नहीं मानी, हालांकि परमेश्वर का मंदिर उनके बीच में था। ये दंड था।

(इसी दौरान यिर्मयाह नबी - राजा और लोगों को चेतावनी देता रहा, पर वे न माने, 70 साल की बन्धुवाई में बाबुल चले गए) 2 इतिहास 36:17-19

याद रखिये, बाइबिल का परमेश्वर अपना मंदिर खुद फुंकवा देता है, जब उसकी पवित्रता खत्म हो जाती है।

(आज भी यदि आप अपने चर्च और संस्था की इमारत (बिल्डिंग) पर गर्व करते हैं, और परमेश्वर की इच्छा नकारते हैं? तो परमेश्वर को इसमें कोई दिलचस्पी नहीं है।)
और आगे एक बड़ी बात सुनिये, वापस दोबारा बनवाता कौन है?
क्या यहूदी राजा? नहीं,
फारस का राजा कुस्रु (Cyrus)
''फारस के राजा कुस्रु (Cyrus) के पहले वर्ष में यहोवा ने उसके मन को उभारा, तब कुस्रु ने ऐलान किया कि स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा ने पृथ्वी भर का राज्य मुझे दिया है, और उसी ने मुझे आज्ञा दी है कि यरुशलम जो यहूदा में है उसमें मेरा एक भवन (मंदिर) बनवा।'' 2 इतिहास 36:22, 23
आज सवाल है–
कहीं हम इस धोखे में तो नहीं हैं कि परमेश्वर केवल हम ही से अपना काम करवा सकता है? (कुस्रु?)

5. आदर पाने की होड़

मसीही जगत में एक ऐसा पाप है जिसे हम देख नहीं रहे हैं या देखना नहीं चाहते।
प्रभु यीशु ने कहा, ''मैं मनुष्यों का आदर नहीं चाहता'' – यूहन्ना 5:41
सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु जगत में आते हैं। क्या आदर पाते हैं। क्या मनुष्यों का आदर चाहते हैं?
वो जगत में आया और सृष्टिकर्ता था पर जगत ने उसे स्वीकार नहीं किया। वो अपने लोगों में आया और लोगों ने उसे नही पहचाना। वो ज्योति था और अंधकार ने उसे स्वीकार नहीं किया। (यूहन्ना 1)
वो यरूशलेम की धर्मनगरी में नहीं आया, एक छोटे से कस्बे में गरीबों में कंगाल बनकर आया। तीर्थयात्रियों की वाहवाही लेने वो उनके त्योहारों ओर मेलों में नहीं गया।
भीड़ इकट्ठी करने चेलों को बस्तियों में नहीं भेजा। चमत्कारी सभाएं करने के लिए शामियाने नहीं गाड़े।
धन इकट्ठा करके धन इस्तेमाल करके अपना प्रचार नहीं किया। (यहूदा ने हर दिन उसकी चोरी करी थी।)
शैतान की परीक्षा में उसने मंदिर के कंगूरे से कूदकर अपने आप को ईश्वर पुत्र साबित नहीं किया।
संसार के साम्राज्य का शासक होने के प्रस्ताव (ऑफर) को ठुकरा दिया।

जब उसने अपना पहला प्रचार नासरत के आराधनालय में दिया और घोषणा की कि यशायाह की पुस्तक में जिस मसीह का जिक्र है वह मैं हूँ और मैं
कंगालों को खुशखबरी
अंधों को आंखें
बंधुओं को मुक्ति और कुचले हुओं को उठाने आया हूँ।
तब बैठे भक्तों ने उसे फूलों की माला नहीं पहनाई जैसे आज होता है। उसे धक्के, गालियां और मौत का खतरा झेलना पड़ा।
लोगों ने उसे आराधनालय से बाहर खदेड़ा और उसे खींचते निरादर करते हुए शहर के बाहर पहाड़ से गिराकर मार डालने ले गए।
कई बार उन्होंने उसे पत्थरवाह करने की कोशिश की।
प्रभु यीशु ने कहा, यदि कोई मेरी सेवा करना चाहे तो मेरे पीछे हो ले। जहां में रहूंगा वहां मेरा सेवक रहेगा और मेरा पिता उसका आदर करेगा।
(मेरे पीछे आये, यानि मेरा जीवन धारण करे)
सवाल है – आज ये मसीही जगत में किस तरह की दौड़ चल रही है?
आदर, सम्मान, धन, दौलत, पद, संपत्ति (प्रॉपर्टी), बिल्डिंग्स, नाम, राजनीति और अधिकार व शक्ति। यूहन्ना 12:43
कहाँ है प्रभु यीशु के अपमान, निंदा, अपने आप का इनकार, क्रूस उठाने, और सर्वत्याग का रास्ता?
आज सवाल है–
किसी और यीशु के पीछे तो नहीं चल रहे?

6. आखिर आप हो कौन

कभी लोग जानना चाहते हैं कि आखिर मैं हूँ कौन?
कहां रहता हूँ? क्या शाकाहारी हूं? खादी पहनता हूँ?
मैं जिस तरह दिखता हूँ, तो क्यों दिखता हूँ ?
मेरी संस्था का नाम क्या है?
बाइबिल स्कूल या कॉलेज चलाता हूँ कि नहीं?
कन्वेंशन में प्रचार के लिए कितना खर्चा लेता हूँ?
तमाम सवालों के जवाब चाहते हैं (पता नहीं क्यों, हालांकि मैं एक छोटा सा, आम आदमी हूँ)
अलग-अलग भाषा में जवाब चाहते हैं। नेपाली में, हिंदी में, उर्दू में, अंग्रेजी में,

कहीं से धमकियां आती हैं, तो कहीं से अपमान।
प्रभु यीशु ने सिखाया है शून्य बनना,
''वह शून्य बन गया था'' फिलिप्पियों - 2:7
यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने अपना नाम नहीं बताया, बस कह दिया में एक ''शब्द'' हूँ।
'काश कि मैं अपना नाम ही भूल जाऊं'
प्रभु यीशु ने कहा, ''तुम जो एक दूसरे से आदर (अपना नाम) चाहते हो और वह आदर जो एकमात्र परमेश्वर की ओर से है नहीं चाहते'' यूहन्ना 5:44
आज सवाल है–
आखिर आप हो कौन?

7. अपना बचाव न चाहा

''कितने तो मार खाते खाते मर गए और छुटकारा न चाहा''-इब्रानियों 11:35-38
ये किन लोगों के बारे में लिखा है? इनके साथ क्या हुआ था?
ठट्ठों में उड़ाए गए। कोड़े खाये, बांधे गए, जेल खानों में बंद किये गए।
इन पर पथराव हुआ। आरे से चीरे गए। तलवार से मारे गए।
कंगाल रहे, क्लेश में दुखों में खालें ओढ़े इधर उधर मारे मारे मारे फिरे
जंगलों में पहाड़ों में गुफाओं में और पृथ्वी की दरारों में भटकते फिरे
संसार उनके योग्य न था।
ये वे लोग हैं। जिनके पास पूरी बाइबिल नहीं थीं। जो चाहते थे कि भले ही जान चली जाए पर फिर भी वे परमेश्वर की इच्छा और पवित्र जीवन को न ठुकरायें।
जान बचाना आसान है।
जान खोना इस संसार में बहुत मुश्किल।
आज मसीहियत में संसार में सफलता पाने के लिए हर तरीके अपनाए जा रहे हैं।
प्रभु यीशु शून्य बने। पर हमें अधिकार चाहिए।
प्रभु यीशु ने कहा दुश्मन से प्रेम करो।
पर हम मसीही एक होकर दुश्मन से लड़ेंगे। अपनी शक्ति का एहसास दिलाएंगे।
प्रभु यीशु ने कहा, कोई एक गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा भी फेर दो।
हमारा कहना है कि ये आज की स्थिति में प्रायोगिक (practical) नहीं है।
क्या अपनी शर्तों पर परमेश्वर के राज्य में दाखिल होंगे?
कहीं ऐसा न हो कि वो कहें मैं तुम्हें नहीं जानता।

''जो इस जीवन में अपनी जान बचाएगा वो उसे खोएगा।''
आज सवाल है–
मसीहियत का कहीं नारा ऐसा तो नहीं सुनने में आता कि संसार हमारा है, हम यहां के हैं और हम राज्य करेंगे और अपने अधिकार को लेकर रहेंगे?

8. इस पत्थर पर

मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। – मत्ती: 16:16–18
16. शमौन पतरस ने उत्तर दिया, ''कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है''
17. यीशु ने उसको उत्तर दिया, कि हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है।
18. और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा: और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।
इस भाग में हम क्या सीखते हैं?
यही कि कलीसिया या चर्च का निर्माण प्रभु यीशु ही करते हैं। चर्च प्लांटिंग (स्थापना) हमारी ताकत, प्रतिभा, योग्यता या रुपए (डॉलर) की शक्ति द्वारा नहीं होता है। यह काम केवल प्रभु यीशु का है। कहाँ और कैसे निर्माण होगा यह उसकी आत्मा द्वारा निर्देशित होता है।
और यह कि कलीसिया का निर्माण और शैतान का हमला साथ-साथ चलता है – क्योंकि प्रभु यहाँ कहते हैं कि अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।
यदि हमारी कलीसिया आत्मिक युद्ध नहीं महसूस कर रही है तो शायद हम कलीसिया निर्माण स्वयं कर रहे हैं प्रभु यीशु नहीं। आज मसीही जगत मे चर्च प्लांटिंग (कलीसिया स्थापना) एक मल्टीनेशनल बिजनेस (बहुराष्ट्रीय व्यापार) की तरह चल रहा है – बजट पर आधारित है।
किस पत्थर पर कलीसिया का निर्माण होगा?
जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह पत्थर, इस वचन पर प्रभु यीशु को परमेश्वर का पुत्र का खिताब देने के खिलाफ शैतान है – मत्ती 4 में वो बारबार कहता है – यदि तू परमेश्वर का पुत्र है तो? आज ऐसे धर्म हैं जो कहते हैं प्रभु यीशु परमेश्वर के पुत्र नहीं हो सकते। यहूदियों ने यीशु को मारने के लिए पत्थर उठाए, यूहन्ना 5 में उनका आरोप था कि उसने अपने आपको परमेश्वर का पुत्र कहकर परमेश्वर की निंदा की है।
पतरस को प्रभु यीशु का जवाब–मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में

है, यह बात तुझ पर प्रगट की है। - कहने का अर्थ - ज्ञान से नहीं ख्र यीशु के साथ घूमने फिरने से नहीं - साथ में तो यहूदा भी रहता था।
ये परमेश्वर का प्रगट करना है।
मत्ती 11:25 में यीशु ने कहा, हे पिता, स्वर्ग और पृथ्वी के प्रभु, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं, कि तू ने इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा, और बालकों पर प्रगट किया है।
कुरिन्थियों 1:26-28 में जैसे लिखा है, ''हे भाइयो, अपके बुलाए जाने को तो सोचो, कि न शरीर के अनुसार बहुत ज्ञानवान, और न बहुत सामर्थी, और न बहुत कुलीन बुलाए गए। परन्तु परमेश्वर ने जगत के मूर्खों को चुन लिया है, कि ज्ञानवालों को लज्जित करे, और परमेश्वर ने जगत के निर्बलों को चुन लिया है, कि बलवानों को लज्जित करे। और परमेश्वर ने जगत के नीचों और तुच्छों को, वरन जो हैं भी नहीं उन को भी चुन लिया, कि उन्हें जो हैं, व्यर्थ ठहराए।''
यूहन्ना 4 में सामरी स्त्री - 5 पति कर चुकी थी, 6 वें के साथ बिन ब्याहे रहती थी, अनपढ़, गँवार ही थी - फिर भी जीवन का जल - पवित्र आत्मा, पाकर वो सारे गाँव वालों को आत्मिक कलीसिया मे लाती है - क्योंकि वह नहीं बोल रही थी - पर उसके अंदर से पवित्र आत्मा कार्य कर रहा था। परमेश्वर का प्रगट करना था। सारा निनवे बदल गया इसलिए नहीं कि उन्हें मछली का चमत्कार पसंद आया, पर इसलिए कि पवित्र आत्मा ने उन्हें पाप से कायल किया।
आज सवाल है–
कहीं हम तो नहीं बना रहे कलीसिया - प्रभु यीशु को बनाने दें।

9. एक दिन-प्रभु यीशु के जीवन का (मरकुस 1:21-39)

अपने शिष्यों का चुनाव करने के बाद वो कफरनहूम नाम की बस्ती में आये। आराधनालय में गए उपदेश दिया। उसके उपदेश से लोग चकित हुए क्योंकि वो शास्त्रियों की तरह नहीं - जो सिर्फ ज्ञान बाँटते थे।
पर अधिकार के साथ - प्रभु यीशु का उपदेश होता था। (जिसका अर्थ है वो लोगों को खुश करना नहीं चाहता था, उसकी कथनी और करनी में फर्क नहीं था)
वो जीवन बांटता था ज्ञान नहीं।
उसकी बातें सुनने और उससे चंगाई पाने के लिए सारा नगर उसके द्वार के आगे जमा हो गया। उसने हर प्रकार की बीमारियों से पीड़ित लोगों को चंगा किया, भूत प्रेतों को निकाला।

इसके बाद क्या किया प्रभु ने। सुबह दिन निकलने के बहुत पहले वो उठा (क्या सोचते हैं? क्या समय होगा। शायद सुबह के 4 बजे) वो एक जंगली स्थान (चर्च?) में गया और वहां प्रार्थना करने लगा।

सवाल है–क्या प्रार्थना की इतनी बड़ी आवश्यकता थी कि परमेश्वर का पुत्र, जगत का सृष्टिकर्ता, सृष्टि में आकर हर बात के लिये अपने पिता की इच्छा जानना चाहता है और उस पर निर्भर रहना चाहता है?

आज मसीहियत में प्रार्थना की कमी है। गीत जोरों पर हैं। गायक नामी हैं, क्वायर अच्छा है। चर्च बड़ा है। मेंबर बहुत हैं। अनेक समाज सेवा के काम चल रहे है। लेकिन प्रार्थना न के बराबर। बस कुछ लोग, कभी-कभी, चंद मिनटों के लिए प्रार्थना करते हैं।

जब प्रभु यीशु से प्रेम होगा तो प्रार्थना अधिक होगी। जब प्रभु यीशु पर भरोसा होगा तो प्रार्थना अधिक होगी। जब हम कमजोर होंगे और प्रभु पर निर्भरता होगी तो प्रार्थना अधिक होगी। जब हम पिता की इच्छा इस संसार में करेंगे तो प्रार्थना अधिक होगी। जब हम प्रभु यीशु का जीवन चाहेंगे। और पवित्र आत्मा की भरपूरी चाहेंगे तो प्रार्थना अधिक होगी जब हम प्रभु यीशु के गवाह बनना चाहेंगे तो प्रार्थना अधिक होगी। शरीर है लेकिन आत्मा?

आज सवाल है–

कब, कहाँ और कितनी प्रार्थना करते हैं?

10. एकलौता पुत्र मर गया

जो जीवित हुआ तो उसका परिचय हमेशा के लिए बदल गया। पुनरुत्थान के बाद बाइबिल में कहीं भी प्रभु यीशु को 'एकलौता नहीं' कहा गया।

उसे ''पहिलौठा पुत्र'' कहा गया।

(मृत्यु पर जय पाने वालों में पहला)

(उन्हें पहले से ठहराया भी है, कि उसके पुत्र के स्वरूप में हों, ताकि वो बहुत भाइयों में पहिलौठा ठहरे - रोमियों 8:29)

ऐसा क्यों?

भाई कहलाना तो दूर की बात थी, प्रभु यीशु ने जब स्वयं अपने आप को परमेश्वर का पुत्र कहा तो फरीसियों ने उसे मारने के लिए पत्थर उठाये।

प्रभु यीशु का इस संसार में आना और क्रूस पर मर के फिर से जी उठने के परिणाम से हमको मिला है ये वरदान।

हमारा भी 'पुराना मनुष्यत्व' उसके साथ क्रूस पर मर गया, जब हमने उस पर विश्वास किया। रोमियों 6:6

अब हम आम इंसान नहीं रहे। परमेश्वर की संतान हैं हम पाप के लिए, और इस संसार के लिए मर गये। और प्रभु यीशु की आत्मा में हम जीवित हैं।

इसी लिये पुनरुत्थान के बाद प्रभु यीशु ने मरियम से कहा, ''मेरे भाइयों के पास जाकर उनसे कह दे कि मैं अपने पिता और 'तुम्हारे पिता', और अपने परमेश्वर और 'तुम्हारे परमेश्वर' के पास ऊपर जाता हूँ। - यूहन्ना 20:10

यदि हम प्रभु यीशु के भाई बंधु बने हैं, तो हमारी शक्ल हमारा व्यवहार उससे मिलना चाहिए।

आज सवाल है,

क्या हम प्रभु यीशु के हमशक्ल दिखते हैं?

11. कुँए पर बैठा आदमी कहीं मसीह तो नहीं? यूहन्ना 4

मूर्खता की बात तो लगती है। और वो भी एक गंवार सी औरत के मुंह से।

और सच तो ये है कि आत्मिक बातें तो मूर्खता लगती हैं और इसीलिए तो उन्हें मानने के लिए विश्वास की आवश्यकता है।

''क्योंकि जब परमेश्वर के ज्ञान के अनुसार संसार ने ज्ञान से परमेश्वर को न जाना तो परमेश्वर को यह अच्छा लगा, कि इस प्रचार की मूर्खता के द्वारा विश्वास करने वालों को उद्धार दे।'' - 1 कुरिन्थियों 1:21

यदि तुम जानती और पहचानती तो मांगती।

परमेश्वर सत्य और आत्मा से भजने वाले भक्तों को ढूंढ़ता है। न जानना, न पहचानना अंधकार है। तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें बंधन से आजाद करेगा।

सामरी स्त्री की गवाही क्या थी। यह कि उसने मुझे सब कुछ बता दिया।

उसका अपना जीवन झूठ से भरा था। कभी किसी को सीधा जवाब शायद नहीं दिया था। कपट और बस धोखा, न ही उससे किसी ने उसके जीवन के कड़वे सच को बताया था।

सामरी स्त्री का प्रचार - आओ देखो उसे। इससे बड़ा कोई प्रचार नहीं होता जो अपना नहीं पर मसीह का प्रचार करे।

वह जो कुँए पर बैठा है कहीं मसीह तो नहीं?

सामरियों ने गांव के बाहर कुँए पर बैठे यीशु को जगत का उद्धारकर्ता मान लिया।

और आज ये आलम है कि क्रूस पर लटकते मसीह को देखकर भी हमारा विश्वास

कमजोर है।
जब तक चमत्कार की चमक न दिखे तो कुछ न लगे।
आज सवाल है–
कुँए पर बैठा हुआ आदमी मसीह है?

12. क्या किया?

ये सवाल आप से नहीं पूछा जाएगा, प्रभु यीशु के न्याय आसन के सामने।
वहां हमसे सवाल बस एक पूछा जाएगा - क्यों किया?
क्यों किया सवाल होते ही हमारे बड़े-बड़े नामी काम जो हमने इस धरती पर किये थे उनका X-ray निकल जाएगा। यानि, हर काम करने के पीछे छिपा उद्देश्य प्रगट किया जाएगा।
तब शायद घास फूस से बना हमारा मसीही कार्यों और योजनाओं (projects) का महल जलकर राख हो जाएगा।
जिसका अर्थ है। शायद हमारे स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, चर्च प्रोपर्टी, आर्गेनाइजेशन, देश-विदेश की यात्राएं, कांफ्रेंस, और हमारी डिग्रियां आग की लपटों में जलकर राख हो जाएंगी। जी उसके न्याय आसन के सामने।
इसके विपरीत, परमेश्वर की महिमा के उद्देश्य से किया गया हर काम एक सोने के भवन की तरह आग की जांच में खड़ा रहेगा।
''वो दिन आग के साथ प्रगट होगा। और वह आग हर एक का काम परखेगी की कैसा है।'' 1 कुरिन्थियों 3:12, 13; मत्ती 6:1
आज परमेश्वर की इच्छा जानकर, उस पर भरोसा रखकर निर्भर रहकर किया गया कार्य बहुत कम है।
शायद जो भी हम करते हैं उससे हमारा नाम हमारे चर्च (कलीसिया) का नाम या हमारे परिवार का नाम होता है। प्रभु यीशु के न्याय आसन के सामने कुछ और ही नजारा होगा। हमारा हर काम आग से जांचा जाएगा।
बाइबिल कहती है, ''क्या मेरा वचन आग सा नहीं है?'' यिर्मयाह 23:29
वचन के आधार पर हमारा न्याय होगा।
आज सवाल है–
क्या जवाब होगा, क्यों किया था?

13. क्या लगता है?

प्रेम ने न्याय को बिगाड़ दिया है?
कहां गया न्याय जब,
- व्यभिचारी स्त्री को पत्थरवाह से बचा लिया
- गुनाहगारों को बचाने आ गया
- कहता था दुश्मनों से प्यार करो।
- जो एक मील बेगार में ले जाए तो 2 मील चले जाओ
- जो एक गाल पर थप्पड़ मारे तो दूसरा भी फेर दो
- क्रूस पर लटकते हुए अपने 'हत्यारों से बदला' या 'अपने लिए न्याय' की मांग नहीं करता।

''मरना तो हमें था, कोई और मर गया''
लगता तो है अन्याय
मूसा कानून और दंड लेकर आया
प्रभु यीशु सत्य के साथ प्रेम, अनुग्रह और क्षमा लेकर आये। यूहन्ना 1:17
''व्यवस्था 'पाप' के साथ 'पापी' को भी नष्ट करे लेकिन प्रेम की आत्मा पाप को तो करे नष्ट पर पापी को बचा ले।''
इसके पीछे सच तो ये है कि हर गुनाह हम 'परमेश्वर के खिलाफ' करते हैं चाहे वो शरीर, आत्मा, प्राण से किसी प्रकार का हो, किसी के खिलाफ हो।
यही कारण है कि वह हमारे विरुद्ध जो ''आरोप और दंड'' है उसे वापस लेने का अधिकार रखता है।
क्रूस की मृत्यु हर गुनाह की सजा है, और उसके अनोखे प्रेम की कीमत है।
उसने अन्याय नहीं, हमारा न्याय किया
'जो प्रभु यीशु में हैं उन पर दंड की आज्ञा नहीं' रोमियों 8:1
आज सवाल है–
न्याय की मांग कर रहे हैं आप, या प्रेम की आत्मा का प्रदर्शन?

14. किससे लड़ रहे हो?

हमारी लड़ाई
न संसार से है,
न सरकार से,

न लोगों से है...
एक मसीही अपना जीवन उस समय व्यर्थ गंवाने लगता है जब आंखों से दिखने वाली वस्तुओं से लड़ता रहता है।
शारीरिक युद्ध लड़ता है। और आत्मिक हार जीवन में अनुभव करता रहता है।
क्योंकि हमारा ये मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परंतु प्रधानों से और अधिकारियों से और इस संसार के अंधकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। इफिसियों 6:12
अपनी लड़ाई को मनुष्य के साथ मत रखो। हमारी लड़ाई मनुष्य से नहीं है।
इसीलिए हमें क्रूस उठाने और मरने और निंदा और दुख सहने के लिए हर दिन तैयार रहना है।
आज सवाल है–
आपका समय किससे लड़ने में बीत रहा है?

15. गणित पढ़ाने वाला क्या शराब नहीं पी सकता?

क्यों नही, पी सकता है।
2. इलेक्शन में प्रचार करने वाला क्या गाली नहीं दे सकता?
क्यों नहीं, दे सकता है।
3. क्या बाइबिल सिखाने वाला कपट का दोहरा जीवन नहीं जी सकता?
क्यों नहीं, जी सकता है।
लेकिन वो इसलिए कि उसके पास मात्र ज्ञान है प्रभु यीशु का सत्य नहीं है।
क्योंकि प्रभु यीशु ने कहा है।
''तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा''
यूहन्ना 8:32
सत्य कुछ करता है।
सत्य ज्ञान नहीं है 'अनुभव' है।
सत्य विवेक नहीं है 'जीवन' है।
सत्य बोध नहीं है 'आत्मा' है।
सत्य परिचय नहीं है 'रिश्ता' है।
सत्य और कोई नहीं 'प्रभु यीशु' है।
सत्य पवित्रता लाता है।
जीवन बदल देता है।

संसार, शरीर, शैतान और पाप के बंधनों को तोड़ता है।
आजाद करता है।
आज सवाल है–
सत्य ने आपको ज्ञान दिया है या जीवन?

16. गीत गवालो, संदेश दिलवालो, और तमाम कार्यकलाप (Activities) करवालो

लेकिन,
प्रार्थना में चंद मिनट भी बहुत लंबे और थकान वाले होते हैं।
शायद हमारे पास प्रार्थना तो है, लेकिन लगता ऐसे है जैसे फोन के दूसरे छोर पर कोई उठाने वाला (Receiver) नहीं है।
''जब तू प्रार्थना करे, तो अपनी कोठरी में जा और द्वार बंद करके अपने पिता से जो ''गुप्त'' में है प्रार्थना कर, और तेरा पिता जो गुप्त में ''देखता'' है, तुझे ''प्रतिफल'' (उत्तर) देगा। मत्ती 6:6
इस वचन के अनुसार
आपको परमेश्वर दिखाई नहीं देता है।
लेकिन क्या आप - उसे दिखाई देते हैं?
जवाब - दिखाई देते हैं।
क्या वह आपकी प्रार्थना सुन रहा है?
जवाब - सुन रहा है, क्योंकि वह उसका जवाब भी दे रहा है (प्रतिफल)
मैंने मसीहियों में प्रार्थना का जीवन बहुत कमजोर पाया है।
ऐसा क्यों?
परमेश्वर से रिश्ता कमजोर है। इस जीवन में, दिनचर्या में परमेश्वर का स्थान (Involvement) नहीं है।
समझिए आपका बच्चा दूसरे शहर में रहता है, लेकिन कभी कोई सम्पर्क नहीं रखता है। उसके पास बस आप एक तस्वीर हैं, और दीवार पर टंगे हैं।
प्रार्थना रहित जीवन, परमेश्वर रहित जीवन है।
आज सवाल है–
आपका परमेश्वर मात्र एक तस्वीर बनकर तो नहीं रह गया?

17. ग्रहण योग्य भेंट

विदेश यात्रा के दौरान मुझे एक चर्च में प्रचार करने के लिए आमंत्रित किया गया। 100 साल से अधिक समय से वहां उसी स्थल पर यह चर्च चल रहा है। सब कुछ आलीशान था। गाड़ियों की पार्किंग के लिए बहुत अच्छी व्यवस्था थी। बगीचा (गार्डन) बहुत बड़ा था। सुंदर वृक्ष थे। चर्च के अंदर अलग-अलग हॉल थे। लाइब्रेरी थी। सभी आधुनिक साधन थे।

आराधना आरम्भ हुई। भक्ति गीत गाये गए। इसमें एक घंटा हुआ और इसके बाद उन्होंने कॉफी ब्रेक (Coffee break) कर दिया। हम सब चर्च हॉल से एक दूसरे हॉल में आये और कॉफी (Coffee) पीने लगे।

जब लौटे तो मैंने देखा कुछ पुराने लोग चले गए पर कुछ नए लोग शामिल हो गए थे। अगले एक घंटे के दौरान प्रभु भोज (Holy Communion) हुआ। और फिर से एक कॉफी ब्रेक (Coffee break)। इसके बाद मेरा प्रचार शुरू हुआ। मैंने वहां नोट किया कि कुछ पिछले चेहरे गायब थे पर कुछ नए चेहरे शामिल हो गए थे।

आराधना खत्म होने के बाद मैंने सवाल किया कि 3 घंटे की मीटिंग के दौरान 2 कॉफी ब्रेक क्यों हुए।

जवाब था, भाई यहां पर लोग बहुत व्यस्त हैं।

कोई सिर्फ भजन के सेशन अटेंड करके वापस चला जाता है, तो कोई सिर्फ कम्यूनियन में भाग लेकर लौट जाता है तो कोई सिर्फ मैसेज सुनने आता है।

हाँ कोई तो 3 घंटे तक भी बैठता है। व्यवस्थित करने के लिए हमने कॉफी (coffee) ब्रेक के इंटरवल डाले हैं।

तो क्या ख्याल है आपका?

उत्पत्ति के चौथे अध्याय में हम आदम के दो बेटों के परमेश्वर की वेदी पर कुछ अर्पण करने के बारे में देखते हैं।

कैन किसान था और अपनी उपज से - कुछ भेंट ले आया (सबसे उत्तम उपज नहीं लिखा है। बस - कुछ) और हाबिल अपनी भेड़ बकरियों के पहिलौठे लाया (याने सर्वोत्तम भाग लेकर आया।)

परमेश्वर ने कैन को (उसके छोटे मन) और उसकी भेंट (जो उसकी उपज की सर्वश्रेष्ठ नहीं थी) को ग्रहण नहीं किया।

पर हाबिल को (उसके मन) और उसकी भेंट (उसकी सर्वोत्तम भेड़ें थीं) को ग्रहण किया। उत्पत्ति 4:3-5

याद रखिये–जब हम परमेश्वर के पास कुछ भेंट लाते हैं तो पहले वो हमारे देने वाले

मन को देखता है और फिर हमारी भेंट को देखता है।
दोनों ग्रहण योग्य होना चाहिए।
परमेश्वर कहता है तुम अंधे, लंगड़े और रोगी पशुओं को मेरे पास बलिदान चढ़ाने लाते हो? क्या तुम अपने किसी अधिकारी को भी वो भेंट में दे सकोगे? मलाकी 1:8
आज हम परमेश्वर की न इज्जत करना चाहते हैं। ना अपनी कोई कीमती वस्तु ही देना चाहते हैं। बस जो बचा खुचा, बेकाम का समय, धन या सेवा देने चाहते है? कुर्बानी की मनसा हमारे अंदर नहीं है।
आज सवाल है–
क्या आप और आप की भेंट दोनों परमेश्वर को ग्रहण योग्य है?

18. चाहे हो कोई सरकार प्रभु यीशु का है अधिकार

(प्रभु यीशु के अनुयायियों का नारा)
नेबुकदनेजर राजा सोच बैठा था कि शायद राज्य उसका है और वो शासन कर रहा है। जब वह बाबुल के राजभवन की छत पर टहल रहा था, तब वह कहने लगा, क्या यह महान बाबुल नहीं है, जिसे मैंने ही अपने बल और सामर्थ से राजनिवास होने को और अपने प्रताप की बड़ाई के लिये बसाया है। उसी समय उसका शासन उसके हाथ से निकल गया और वो कंगाल बन गया, और उसका दिमाग और प्रकृति भी बदल गई। यहां तक कि वो घास खाने लगा और जानवर की तरह हो गया। ये एक ऐसे व्यक्ति की तस्वीर है जो परमेश्वर के अधिकार को चुनौती देता है और बगावत करता है।
आज भी हमारे संसार में ऐसे लोग हैं जो अपने बल और वैभव को कुछ समझते हैं। उनके घास खाने के दिन नजदीक हैं।
जब नेबुकदनेजर को सात साल घास खाने के बाद होश आया तो उसने स्वीकार किया और ऐलान किया कि जो जीवित हैं वे जान लें कि परमप्रधान परमेश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है, और उसको जिसे चाहे उसे दे देता है, और वह छोटे से छोटे मनुष्य को भी उस पर नियुक्त कर देता है। वह छोटे इंसान को भी तख्त पर बैठा देता है। बाइबिल में एक दुनिया का सबसे बड़ा रिकॉर्ड है तख्त पाने का। युसूफ मिस्र देश के तहखाने में सुबह तक कैद था और शाम को मिस्र का प्रधानमंत्री बन जाता है।
मेरा एक पसंदीदा बाइबिल वचन है:
भजन 113:7 – ''वह कंगाल को मिट्टी पर से, और दरिद्र (निर्धन) को घूरे पर से उठा कर ऊंचा करता है।''

फिली 2:5-11 जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था ... जिसने अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास बना... अपने आप को दीन किया... हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली। इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे हैं वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें।
उसने हमें अपनी संतान होने का अधिकार दिया है-यूहन्ना 1:12
प्रभु यीशु ने कहा, सारा अधिकार मुझे दिया गया है इसलिए जाओ।
आज सवाल है-
क्या अभी भी डर है?

19. चोरी हुई थी

चोरी हुई थी, प्रभु यीशु की हर दिन तो क्या किया उसने, और क्या करते आप?
मैं सोचता हूँ कि बारह चेलों में से सबसे चतुर (educated) यहूदा इस्करियोती था। शायद इसलिए उसे 'पैसों के थैले' को रखने का काम मिल गया था।
पैसों का सही इस्तेमाल करने के बारे में उसके पास कई विचार (idea) थे।
जब एक स्त्री ने प्रभु यीशु के पांवों पर बहुमूल्य इत्र डाल दिया तो यहूदा स्त्री पर नाराज हुआ और कहा इस इत्र का सत्यानाश हो गया। इसे बेचकर कंगालों को दिया जा सकता था।
लेकिन उसे न कंगालों की फिक्र थी, न ही प्रभु यीशु की परवाह। वह प्रभु यीशु के अनुयाइयों को व्यापार सिखा रहा था। कैसे खरीदा-बेचा जाता है।
वहां लिखा है वो पैसा जो थैले में डाला जाता था, उसे वह चुरा लेता था। यूहन्ना 12:1-6
प्रभु यीशु को आखिर 30 चांदी के सिक्कों में पकड़वाने का काम भी उसी ने किया।
क्या प्रभु को यह न मालूम था कि उसकी हर रोज चोरी हो रही है?
आखिर हर दिन की चोरी की जानकारी होते हुए भी प्रभु यीशु ने यहूदा के हाथ से थैला लेकर किसी और चेले को क्यों नहीं थमाया? इन बातों की शिकायत उसने दूसरे चेलों से क्यों नहीं की? कभी सोचा इस बारे में आपने ?
वो इसलिए क्योंकि उसका राज्य इस संसार का नहीं था।
इस राज्य में लेनदेन पैसों से होता है, और भरोसा धन पर होता है। लेकिन जिस राज्य से वो आया था, वहां का लेन देन सब कुछ परमेश्वर की सामर्थ पर भरोसे से होता है।
प्रभु यीशु को पैसों (Money) या धन पर निर्भर होने की जरूरत नहीं थी। इसलिए

वो हर दिन लुटता रहा। और थैला आखिरी दिन तक यहूदा के हाथ में ही रहा। आज सवाल है–कहीं आप परमेश्वर का राज्य धन से तो नहीं बढ़ा रहे?

20. 'चिंता' आखिर है क्या?

'चिंता' और 'डर' (Worry and Fear) में फर्क क्या है?

'डर' और 'चिंता' एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।

हर एक व्यक्ति के अंदर 'डर' है।

आने वाले किसी 'खतरे की उम्मीद' को डर कह सकते हैं।

जैसे बेरोजगारी, निर्धनता, बीमारी, इम्तहान, परिवार से जुड़ी बातें इत्यादि एक 'डर' उत्पन्न कर देती है।

डर और चिंता में अंतर

'डर' किसी बुरे परिणाम की उम्मीद से जुड़ी व्याकुलता है। और 'चिंता' (worry) उस 'डर' को दूर करने के अनेक उपायों की खोजबीन/संघर्ष है। जिसमें हम उलझ जाते हैं। 'चिंता' उपाय नहीं है। हल की 'तलाश' है।

डर दूर करने की 'दवा ढूंढना' है।

जब प्रभु यीशु कहते हैं तुम चिंता मत करो तो उसका मतलब क्या है।

यह कि, मेरे पास सबसे अच्छा समाधान है मुझ पर भरोसा रखो। मुझ पर निर्भर हो जाओ। यदि हम उसकी मानेंगे तो हमारी चिंता दूर हो जाती है। और चिंता दूर होने से डर भी निकल जाता है।

प्रभु यीशु ने कहा, तुम्हारा मन व्याकुल न हो तुम मुझ पर विश्वास रखो। यूहन्ना 14:1

तुम चिंता न करो। अपने प्राण के लिए ये चिंता न करना की हम क्या खाएंगे और क्या पीएंगे, और क्या पहिनेंगे।

तुम में कौन है जो चिंता करके अपने जीवन की एक घड़ी भी बढ़ा सकता है। सो चिंता न करो। मत्ती 5:25-34

हमारी हर जटिल (complex) समस्या का परमेश्वर के पास सरल (simple) सा उपाय होता है।

अपनी चिंताएं प्रभु के हाथ देकर तो देखिए

उसने कहा था। अपनी चिंता मुख पर डाल दो। भजन 55:22

हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे लोगो मेरे पास आओ मैं तुम्हें विश्राम दूंगा। मत्ती 11:28

हमारे प्रयास 'चिंता' उत्पन्न करते है। लेकिन परमेश्वर पर निर्भरता 'शांति' लाती है। रोमियों 8:28
आज सवाल है–
आपके पास चिंता है या शांति?

21. ठहरो, अभी प्रचार मत करो

(और देखो जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूंगा, और जब तक स्वर्ग से सामर्थ न पाओ, तब तक तुम इसी शहर में ठहरे रहो। लूका 24:49)
कब्र से बाहर जीवित होकर आए थे। बाग में कब्र का पत्थर लुढ़का पड़ा था। चेलों के पास प्रभु यीशु बंद दरवाजे होने के बावजूद अंदर आते रहे। उन्हें अपने जख्म दिखाये, उनके साथ भोजन करते हैं।
उनके साथ सड़क पर चलते हैं।
परमेश्वर के राज्य के और भेद भी 40 दिन तक उन्हें बताते हैं।
शहर के बाहर जैतून के पहाड़ पर एक बड़े झुंड को चेलों के साथ लेकर जाते हैं।
चेलों ओर जमा लोगों के देखते-देखते वे स्वर्ग की ओर आसमान में चले जाते हैं।
क्या ये सारी अद्‌भुत बातें और आंखों देखे चमत्कार चेलों के प्रचार कार्य और गवाही के लिए काफी नहीं थे?
क्यों कहा अभी ठहरो।
जी हां काफी नहीं थे।
हमारा ज्ञान, हमारी बुद्धि, हमारी शिक्षा, डिग्रियां, धन दौलत, हमारा अनुभव, चमत्कार की बातें और काबिलियत परमेश्वर के सुसमाचार प्रचार और गवाही के लिए काफी नहीं हैं।
क्योंकि प्रभु यीशु ने उनसे कहा–
ठहरो, उस समय तक चुप रहो जब तक पवित्र आत्मा तुम्हारे अंदर अपनी शक्ति से न आये, ताकि तुम्हारे कर्म और वचन तुम्हारे न रहें। लेकिन परमेश्वर के रहें।
प्रेरित 1:7, 8, यशायाह 55:11
आज सवाल है–
कहीं हम अपनी सामर्थ से तो प्रभु की सेवा नहीं कर रहे?

22. दोनों ही ने खून बहाया

(रणभूमि में जब वे मिले, तो खून ही खून बहा)

संसार के सबसे क्रूर, दुष्ट, खूनी राजा का सामना मानव इतिहास के सबसे प्रेमी, दयावंत, और दीन राजा से होता है।

यरूशलेम / बेतलेहेम की रणभूमि पर –

एक राजा – महल में स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान है। और संसार के इतिहास के सबसे जघन्य अपराध को अंजाम देता है।

इतिहास की एकमात्र घटना जब केवल 2 वर्ष से कम उम्र के मासूम बच्चों का कत्लेआम हुआ। घरों में गलियों में बस खून ही खून!

दूसरा राजा – निर्बल बनकर, एक जानवरों के गौशाले में जन्म लेता है, और कंगालों को कुचले हुओं को ख्रष्टिहीनों को और बंधुओं को स्वर्ग राज्य देने के लिए अपने खून की आखिरी बून्द भी बहा देता है।

''राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु'' – प्रकाशितवाक्य 19:16

आज सवाल है–

किस राजा की महिमा देख रहे हैं?

23. धर्म, धन, राज शक्ति, व्यापार = डाकुओं की खोह

गदहे पर सवारी करने की क्या जरूरत थी?

(मत्ती 21, लूका 19, मरकुस 11, यूहन्ना 12)

प्रभु यीशु तो गांव गांव पदयात्रा करते हुए। अनुग्रह और सत्य का शुभ सन्देश बांट रहे थे।

यरुशलम जो धर्म, धन, समृद्धि, वैभव और शक्ति का प्रतीक था वहां गलील प्रदेश के कस्बे से आये प्रभु यीशु, गांव वालों की भीड़ लेकर क्या ला रहे हैं?

विजय प्रवेश?

अनपढ़ों की, गरीबों की, कमजोरों की भीड़ लेकर कौन सी क्रांति लाये हैं?

जिस यरुशलम की सड़कों पर घोड़ों, हाथियों, रथों पर सवार राजा महाराजा विजयी सेनाओं के साथ, रोम, बेबीलोन, असीरिया, मिस्र और यूनान से गर्व से प्रवेश करते थे और अपनी विजय का परचम फहराते थे, वहीं आज नजारा दुनिया की नजर में है, एक कंगाल, कमजोर और कुचले, बंधुओं की भीड़ का।

उस के ऊपर एक अजीब बात ये, की उनका क्रांतिकारी प्रभु, चिल्ला चिल्ला कर रो रहा था। और कुछ बोल रहा था ये कोई क्रांति है?

जी हां, प्रभु यीशु की क्रांति सड़कों तक सीमित नहीं थी, भीड़ को लेकर वो यरूशलेम के आत्मिक गढ़ की विजय को निकला था, जिसको झूठे भविष्यद्वक्ताओं

ने, लुटेरे याजकों ने और व्यापारियों ने अपना अड्डा बना रखा था।
वहां वह सीधे पहुंचता है। और अपने पिता के प्रार्थना के घर को आजाद करता है।
आज सवाल है–
क्या आज 'प्रार्थना के घर' व्यापार के अड्डे तो नहीं बने हुए हैं?

24. नामधारी विश्वास - नहीं सुना था आपने?

(बस 'नामधारी ईसाई' ही सुना होगा।) समझाता हूँ।
हमारे सूर्य के अंदर करीब दस लाख पृथ्वी समा सकती हैं। ये विज्ञान है, सत्य है, आप विश्वास करते हैं। लेकिन इससे क्या किसी के झूठ बोलने की आदत या शराब पीने की आदत पर कोई असर पड़ता है? नहीं पड़ता है।
ये 'नामधारी विश्वास' का उदाहरण है। मैंने 'नामधारी विश्वास' की एक 'परिभाषा' बनाई है। ये ''ऐसा विश्वास है जो जीवन में परिवर्तन/असर नहीं लाता है''
ऐसा विश्वास जो दुष्ट आत्माएं भी परमेश्वर पर रखती हैं याकूब 2:19
ऐसा विश्वास जो हमारे जीवन में कार्य न करे वो बस 'ज्ञान' है। इब्रानियों 11:6 में लिखा है। ''विश्वास (भरोसे) के बिना उसे प्रसन्न करना असंभव है'' (without faith it is impossible to please God)
हिंदी बाइबिल में Faith का अनुवाद सही नहीं है। विश्वास (Faith) का अनुवाद 'भरोसा' होना चाहिये। क्योंकि तभी उसका सही मतलब हमें समझ में आएगा। बाइबिल समझ में आने लगेगी। भरोसा - निर्भरता को जन्म देता है। और यही परमेश्वर चाहता है। ऐसा विश्वास जो हमें परमेश्वर पर निर्भर न करे, वो बेकार है।
इब्रानियों 11:1 को मैं नये अनुवाद के साथ लिखता हूँ।
''अब परमेश्वर पर भरोसा (Faith)'', आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है। विश्वास (भरोसा) से धर्मी जन जीवित रहेगा।
रोमियों 1:17 (Just shall live by faith)
यशायाह 26:3/नीतिवचन 3:5
विश्वास (Believe) - सत्य को मानना परमेश्वर की सच्चाई को स्वीकार करना है।
भरोसा (Faith)-विश्वास को अनुभव में बदलकर परमेश्वर पर निर्भर रहना।
हिंदी अनुवाद (translation) सही अर्थ बताने में असमर्थ है।
अंग्रेजी में 2 शब्द हैं। to Beleive (विश्वास करना) और have faith (भरोसा रखना)। हिंदी भाषा बाइबिल में अधिकतर जगहों पर दोनों शब्दों का अनुवाद बस विश्वास किया गया है। खास कर नये नियम में।

नये नियम में जहां जहां faith आया है वहां वहां आप 'भरोसा' शब्द इस्तेमाल करिये। ये आप के जीवन को क्रांतिकारी रूप से बदलेगा।

इब्रानियों 12:2 में प्रभु यीशु को - विश्वास का कर्ता (author and finisher)- कहा गया है। जिसका अर्थ है। प्रभ यीशु पर हम जब भरोसा रखते हैं तो प्रभु कार्य करते हैं। और परिणाम (result) लाते हैं।

'नामधारी विश्वास' हमें अग्निकुंड में ले डूबेगा।

प्रभु यीशु ने कहा जब मनुष्य का पुत्र लौटेगा तो क्या इस पृथ्वी पर विश्वास (भरोसा) पाएगा। उसका उत्तर है 'नहीं'। लूका 18:8

क्यों? वो इसलिए कि उनका 'विश्वास नामधारी' होगा। लेकिन प्रभु यीशु पर भरोसा नहीं होगा।

आज सवाल है–

कहीं 'नामधारी विश्वास' लिए तो नहीं जी रहे?

25. नया जन्म - क्या अर्थ है?

कुछ वर्ष पहले एक छोटे से कस्बे में मेरी एक प्रार्थना सभा हुई। समाप्ति के बाद एक सज्जन से मुझे मिलाया गया। उनका परिचय ये था कि उन्होंने अपने जीवन की किसी समस्या से निकलने के उपाय के रूप में किसी तांत्रिक के कहने पर अपने दो छोटे बच्चों की बलि चढ़ा दी थी। सीधे बोलें तो दो कत्ल (double #murder) किया था।

बहुत साल सेंट्रल जेल में थे। मौत की सजा सुनाई गई, बाद में आजीवन कारावास में बदल गयी, और एक दिन वो जेल से बाहर आ गए।

बाहर आने के पहले जेल में किसी ने उसे बताया कि एक आदमी जिसने कत्लेआम किया था डाकू था, वो उसी दिन क्रूस की मौत मर रहा था जिस दिन प्रभु यीशु क्रूस पर चढ़े थे। उसे सरकार ने, समाज ने, परिवार ने और अदालत (कोर्ट) ने माफ नहीं किया था। उस दिन प्रभु यीशु के बाजू में क्रूस पर मरते हुए उसने यीशु से 'जीवन' मांगा था।

उसी वक्त प्रभु यीशु ने उसे क्षमा किया था। और प्रभु यीशु के साथ उसी दिन वो पहला व्यक्ति एक कातिल उसके साथ साथ स्वर्गलोक में पहुंच गया था।

ये सज्जन अपने खुद के 2 बच्चों का खून बहाने के बाद भी प्रभु यीशु से क्षमा और नया जीवन पाकर वापस अपने परिवार में लौट आया था। और आज आजाद था, आनंदित था।

(कुछ पंक्तियां मैंने लिखीं)
ये दाग जो लाल मेरे चेहरे पर हैं।
किसी और के नहीं, मेरे मासूमों के हैं।
ये चीखें जो आती हैं कानों में
कहती, कातिल हूँ मैं, कातिल हूँ मैं
मौत के फंदे से फिर भी निकल आया हूँ मैं
ले ली थी मेरी मौत, किसी और ही ने
प्रभु यीशु क्रूस पर मरे, और हम सब उसके साथ क्रूस पर मर गए। (ये हमारा विश्वास और भरोसा है)
क्योंकि वह हमारे पापों की सजा अपने ऊपर लेकर हमारी मृत्यु उठा रहा था। रोमियों 6:6
जब तक हम पाप के कारण अपनी आत्मा को मरा नहीं जानेंगे तब तक जीवित होने (नए जन्म) की जरूरत को क्यों चाहेंगे?
तो फिर अदन के बाग में हुआ क्या था?
अदन के बाग में कौन मर गया था? अच्छे और बुरे के ज्ञान के पेड़ का फल खाने से?
तो पहले मनुष्य की सृष्टि समझनी होगी
तीन भाग मनुष्य के हैं, जब परमेश्वर ने उसे अदन में बनाया।
1. शरीर - जिससे संसार को जाना जाता है। पांच इंद्रियां उसमें शामिल हैं (consciousness of the #world)
2. प्राण - जिससे हम अपने आप को जानते हैं, जरूरतों को पहचानते हैं। जैसे इच्छा, भाव, निर्णय, (consciousness of self & will, emotion, decisions)
3. आत्मा - जिससे परमेश्वर से रिश्ता होता है। जाना जाता है बातचीत, संगत, और प्रार्थना की जा सकती है। उसकी इच्छा जानी जा सकती है। (consciousness of #God)
तो अदन के बाग में शरीर नहीं मरा था, प्राण नहीं मरा था। लेकिन आत्मा का मरण हुआ था। (परमेश्वर ने कहा था जब तुम इस फल को खाओगे तो निश्चय मर जाओगे)
आत्मा हमारा वो भाग (अंग) था, जिससे हमारी संगति, बातचीत, सृष्टिकर्ता परमेश्वर से होती थी। परमेश्वर की इच्छा जानकर हम जीवन जी सकते थे।
आदम और हवा के साथ हम भी मर गए और परमेश्वर से टूटा जीवन जो मात्र शरीर और प्राण का था। पाप में जीते रहे।

''उसने तुम्हें भी जिलाया जो अपने पापों और अपराधों के कारण मरे हुए थे।'' इफिसियों 2:1

अपनी मुक्ति के लिए जब हम अपना भरोसा प्रभु यीशु पर लाते हैं तो वो अदन की मौत की घटना को पलट देता है।

अपनी आत्मा हमें देता है और हमारी आत्मा को जीवित करता है।

ताकि हम अब नया जीवन, परमेश्वर की आत्मा के द्वारा चलाये चलें। यूहन्ना 3

अच्छे और बुरे के शारीरिक ज्ञान से जीवन न चलाएं। यही बात उसने निकोदीमुस से कही। यूहन्ना 3:8

उसने कहा जो शरीर से जन्मा है वो शरीर (शरीर+प्राण) है। और जो आत्मा से जन्मा है वो आत्मा (शरीर + प्राण + आत्मा) है। यूहन्ना 3:6

कहने का मतलब यह है कि अपनी शक्ति से नया जीवन नहीं मिलेगा। परमेश्वर की आत्मा ही हमारी आत्मा को जीवित करेगा।

यही नया जन्म है। अपनी इच्छा नहीं पर हर समय परमेश्वर की इच्छा पर चलना। तो ये इच्छा कैसे मालूम होती है?

परमेश्वर के वचन की ज्योति, प्रभु यीशु के जीवन की ज्योति और घुटनों में प्रार्थना के समय पवित्र आत्मा का हमारे हृदय में राह दिखाने के द्वारा। हमारे विवेक के नये हो जाने के द्वारा।

उदाहरण के लिए, जब किसी का बड़ा एक्सीडेंट होता है और जब वो बाल बाल बच जाता है तो कहता है मुझे नई जिंदगी मिली है।

बिल्कुल यही अर्थ 'नए जन्म' का है।

क्या आप की गवाही ये है कि आप पापों में मरे हुए थे और नर्क के अग्निकुंड में दफनाए जाने के लिए ले जाए जा रहे थे, उस वक्त प्रभु यीशु ठीक समय पर आए और उन्होंने एक नई जिंदगी दान में दी है।

यदि ये गवाही आप भरोसे के साथ अपने अंदर रखते हैं। तो आप को मुक्ति प्राप्त हो गयी है।

मुक्ति प्रार्थना आप अभी कर सकते हैं।

''हे प्रभु यीशु हम विश्वास करते हैं कि आप का पवित्र लहू मुझ पापी की मुक्ति के लिए बहा था। मुझे पापों की क्षमा दो, अपनी आत्मा दो, नया जीवन दान करो। सच्चे ओर जीवित परमेश्वर बस आप ही हैं। आमीन''

आज सवाल है–

क्या आपका 'नया जन्म' हुआ है? या मात्र धार्मिक ईसाई जीवन है?

26. नहीं चाहिए ऐसी-आराधना

परमेश्वर ने मूसा को निर्देश दिया था कि वेदी किस तरह बनानी चाहिए।
''और यदि तुम मेरे लिए पत्थरों की वेदी बनाओ, तो तराशे हुए पत्थरों से न बनाना; क्योंकि जहां तुम ने उस पर हथियार लगाया वहां तू उसे अशुद्ध कर देगा''-निर्गमन 20:25
वेदी क्या है - वेदी का अर्थ उस समय था ऐसा स्थान जहाँ पर पहुंच कर परमेश्वर से संबंध बनाया जाता था, आराधना की जाती थी, चाहे वहां बलिदान ही चढ़ाया जाए। (आज की तरह सब विश्वासियों के पास पवित्र आत्मा का दान नहीं था) या तो साधारण मिट्टी का ढेर हो या पत्थरों का चबूतरा (Platform) इसकी बनावट पर परमेश्वर ने सख्त निर्देश क्यों दिया।
क्यों कहा कि चाहे पत्थर किसी भी आकार के हों उन पर अपनी छेनी या हथौड़े का इस्तेमाल करके खूबसूरत बनाने का प्रयास न किया जाए।
आज वेदी कोई भवन, चर्च, या क्रूस लगा चबूतरा नहीं है, पर हमारा ''हृदय'' है।
परमेश्वर उसमें नकली सजावट, कपट, धोखा, और झूठ नहीं देखना चाहता है।
वो हमारी सच्चाई चाहता है, पारदर्शिता (Transparent) चाहता है।
या
कथनी और करनी में फर्क है। गीत तो गाते हैं, पर अपनी गायिकी और संगीत का प्रदर्शन अधिक है।
प्रभु यीशु से अधिक अपनी योग्यता ऊपर दिखाते हैं।
अपनी सेवा (Ministry) के द्वारा अपना नाम करते हैं अपनी संस्था (Organization) को ऊपर उठाते हैं।
यदि तुम अपने दिखावे, बुद्धि और काबिलियत (छेनी, हथौड़े) से आराधना करोगे तो तुम्हारी आराधना अस्वीकार होगी।
आज सवाल है–
क्या उसे आपकी आराधना स्वीकार्य है?

27. पान वाला

तो बस दौड़ता ही रह गया।
किस्सा 1953 का है, मेरे पिताजी ट्रेन में सफर कर रहे थे। (उनकी लिखी एक किताब में ये जिक्र है) भीड़ बहुत थी।
एक छोटा सा स्टेशन आया, छोटा सा प्लेटफार्म था।

चाय, समोसे वाले, मूंगफली, और पानवाले खिड़की से ग्राहकों को खोज रहे थे, चंद पैसे अपने परिवार के पेट पालन के लिए पाने के प्रयास में थे।
पिताजी के साथ बैठे लोगों में से एक साधूजी थे। उन्होंने एक पान खरीदा, लेकिन साधूजी पैसे निकालने में जानकर ढील करते रहे।
गाड़ी धीरे-धीरे रफ्तार पकड़ने लगी, लेकिन साधूजी के पैसे निकले नहीं, पान वाला बच्चा हाँफता, दौड़ता चिल्लाता ही पीछे छूट गया।
पिताजी ने साधूजी से सवाल किया–साधूजी आप कहाँ-कहाँ तीर्थ यात्रा पर जाकर आये हो?
बड़े उत्साह से साधूजी ने एक दर्जन से अधिक तीर्थ गिना दिये।
ट्रेन के डिब्बे में बैठे सभी यात्रियों के सुनते पिताजी ने कहा–महाराज जी, आपकी सारी तीर्थ यात्राएं आज बेकार हो गईं, क्योंकि आपके दिल में लालच और धोखा आया और आपने एक गरीब के पैसे लूट लिये।
सारे धरम-करम से आपका जीवन नहीं बदला।
(और वहां उस डिब्बे में बैठे सभी यात्रियों को पिताजी ने प्रभु यीशु में 'मुक्ति' और 'नये जीवन' का सुसमाचार सुनाया)
भगवाधारी साधू हो, सफेद चोगेधारी पादरी हो, हरी पगड़ी धारी मौलवी हो या आम आदमी हम सबकी यही कहानी है, बस जिक्र अभी तक नहीं हुआ है।
दूसरे यात्रियों ने हां में हां मिलाई।
''क्योंकि जो शरीर से जन्मा है वो शरीर है और जो आत्मा से जन्मा है वो आत्मा है'' यूहन्ना 3:6
आज सवाल है–
कहां कहां तक गए हो मुक्ति (पाप से) पाने के लिये?

28. परमेश्वर से व्यापारी रिश्ता (मरकुस 10:17-22)

एक धनी व्यक्ति, जो धार्मिक था और व्यवस्था को पूरा कर रहा था, लेकिन प्रभु यीशु के पास आकर निराश लौट जाता है
(क्योंकि प्रभु यीशु ने उससे कहा था, अपना सब कुछ बेच कर मेरे पीछे आ जाओ)
क्योंकि उसमें एक बात की कमी थी?
वह परमेश्वर से नहीं, धन से प्रेम करता था।
अपने धरम करम के बल पर मुक्ति पाना चाहता था।
प्रेम धन से था - और परमेश्वर से व्यापारी रिश्ता।

(क्योंकि उसका - धर्म व्यवस्था का पालन तो मात्र स्वार्थ था, बस नरक के कष्ट से बचने का उपाय था)
वह अपने कर्मों से मुक्ति खरीदना चाहता था।
(आप चर्च क्यों जाते हैं, अपने दिखावे के कर्म दिखाकर परमेश्वर से कुछ खरीदने तो नहीं जा रहे?)
उसके जीवन में परमेश्वर का रोल ही नहीं था।
'धन' था प्रेम नहीं था।
'क्रिया कर्म' था जीवन नहीं था।
प्रभु यीशु के पीछे चलने का मतलब है, उसके अलावा किसी और दिशा में नहीं चलना है, उसकी इच्छा पूरी करना है।
''हमारे कदमों को दिशा निर्देश - हमारा दिल देता है
जिस ओर हमारे कदम चलते हैं - वो हमारे दिल की चाहत को दिखाते हैं''
(परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया। अपने आप को कुर्बान कर दिया) प्रेम की कीमत धन, दौलत, जमीन, घर, सोना, चांदी, कपड़े या भोजन नहीं है।
प्रेम का जवाब प्रेम से ही दिया जा सकता है।
(ऐसा भी संभव है कि कोई व्यक्ति अपने माता-पिता से प्रेम न करे पर उनका हर खर्चा उठाता रहे)
बिना प्रेम का रिश्ता - व्यापार है।
इसी लिए प्रभु कहता है, ''तू प्रभु अपने परमेश्वर से, अपने सारे मन से, सारी बुद्धि से, और अपनी सारी शक्ति से प्रेम रखना''।
जिसका अर्थ है, परमेश्वर और हमारे प्रेम संबंध के बीच न हमारी स्वेच्छा की खाई हो, न ही हमारी अपनी समझ या शारीरिक, सामाजिक, भौतिक अवस्था की दीवार हो - मरकुस 12:30
आज सवाल है–
उसके प्रेम का जवाब, हमने कैसे दिया है?

29. परमेश्वर का राज्य धन और संपत्ति से नहीं बनेगा

मैं ऐसे भाई बहनों को उत्साहित करना चाहता हूँ जिन्हें न कोई जानें, न उन्हें पहचानें, न रास्ते में सलाम करें, न उन्हें अंग्रेजी आती है और न बड़े लोगों से मुलाकात है। और शायद वह निराश हो जाते हैं।
लेकिन स्वर्ग का पिता उन्हें प्रभु यीशु के द्वारा पहचानता है और उनके काम को सराहता

है। बाइबिल में परमेश्वर दुनिया के कमजोरों और निकम्मों को बहुतायत से इस्तेमाल करता है। परमेश्वर कमजोरों द्वारा शक्तिशाली को हराने में आनंदित होता है।

अतीत में प्रभु ने क्या कहा और किया –

• एक अकेले व्यक्ति और उसके परिवार का सारे संसार से सामना होता है। नूह का एक परिवार अकेले 100 साल तक बड़ी नाव बनाता है और परमेश्वर अपनी योजना पूरी करता है।

• अब्राहम बूढ़ा हो चुका था। जब परमेश्वर ने बुलाया तो नहीं जानता था किधर जाता है पर फिर भी निकल गया। (इब्रानियों 11:8)

• याकूब के घराने के 70 जन मिस्र पर छा गए।

• मूसा के हाथ में लकड़ी दिया और फिरोन के सामने भेजा। मूसा हकलाता था और बात करने के लिए हारून को इस्तेमाल करता था।

• गिदियन ने 300 लोगों के साथ एक लाख से बड़ी सेना को हराया।

• दाऊद के हाथ में पत्थर दिया और गोलियाथ और फिलीस्तिनी सेना को हराया।

• एलिय्याह नबी के सामने 450 झूँठे नबी हार गए। कौए को एलिय्याह नबी को रोटी देने के लिए इस्तेमाल किया और अकाल के समय विधवा का थोड़ा आटा और कुप्पी भर तेल कभी खत्म नहीं हुआ।

प्रभु यीशु ने कहा – हे छोटे झुण्ड मत डर –

• बस जहाँ 2 या 3 मेरे नाम से इकट्ठे हों वहाँ मैं मौजूद होता हूँ वो आ जाता है उसे बड़े संबंधों (कन्वेन्शन) या हजारों की जनता की मीटिंग का इंतजार नहीं होता।

• सिर्फ 12 चेलों से प्रभु यीशु ने अपना कार्य प्रारंभ किया।

• एक बच्चे की 5 रोटी और 2 मछली से उसने हजारों को खिलाया।

• यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला जंगल में अकेला था। जिसे खाने पहिनने के लिए आम लोगों के सामान भी साधन नहीं थे।

• यूहन्ना चेला पटमोस के टापू में बुरे हाल में दुनिया से कटा हुआ था। काले पानी की सजा काट रहा था पर उसे ही यीशु द्वारा संसार और स्वर्ग के भविष्य को दिखने का जिम्मा दिया गया। यदि इंसान का बस चलता तो वो टी.वी., एडवरटाइजिंग और धन को इस्तेमाल करता।

परमेश्वर अपने आप को बच्चों पर प्रगट करता है क्योंकि वे आसानी से विश्वास कर लेते हैं। ज्ञानी इसलिए छूट जाते हैं क्योंकि वे विश्वास नहीं कर पाते लेकिन समझना चाहते हैं।

परमेश्वर ने कुचले, बंधुए, मूर्ख, नीच और चुंगी लेने वालों को चुन लिया और बाजारों व गलियों के टुंडे और लंगड़े, कंगालों और अंधों को चुन लिया। और जो अपनी सामर्थ

पर भरोसा रखते थे वे बाहर रह गए। (1 कुरिन्थियों 1:21)
आज सवाल है–
क्या आप कमजोर हैं? यदि हाँ तो अब आप प्रभु के लिए लायक हैं।

30. परमेश्वर का लंबा परिचय (introduction) दे रहे हो

या
उसकी महिमा कर रहे हो।
प्रभु यीशु की सम्पूर्ण जीवनी एक वाक्य में – ''मैं इसलिए आया हूँ कि पिता की इच्छा पूरी करूँ'' यूहन्ना 6:38
''मैं इसी कारण'' इस घड़ी (क्रूस की मौत) को पहुंचा हूँ, हे पिता अपने नाम की महिमा कर। यूहन्ना 12:27, 28
बाइबिल में कुछ ऐसे शब्द हैं जो रोजमर्रा के जीवन में लोग इस्तेमाल नहीं करते हैं जैसे महिमा, अनुग्रह, इत्यादि
महिमा का इस्तेमाल इंसान के लिए नहीं पर परमेश्वर के लिए होता है ।
हमें याद रखना है कि
– चर्च के कार्यक्रमों से परमेश्वर की महिमा नहीं होती है।
– हमारे जप करने से परमेश्वर की न तो महिमा होती है ना वो प्रसन्न होता है।
– उसकी महानता का बखान करते रहें, और लिस्ट बनाते रहें, इससे क्या होगा?
– और जो जीवन के छोटे बड़े काम वो चाहता है जो उसके पीछे हो लेने से होते हैं, क्या वो हम न करें?
क्या हम परमेश्वर के प्रशंसक (admirers) मात्र रह गए हैं?
परमेश्वर का जीवन जब हमारा भी जीवन बन जाता है, तब हमसे उसकी मर्जी पूरी होने लगती है।
पतरस के पास पहले शब्द थे बस नारे थे, पर जीवन नहीं था।
जब यूहन्ना 21 में उसने कहा मैं प्रेम करता हूँ तो उसका अर्थ था, जान देकर प्रभु की इच्छा पूरी करना।
– प्रेम का अर्थ है अपने आप (इच्छा) को अप्रिय जानना।
– अपनी इच्छा से जीने के अधिकार को छोड़ना।
– गेहूं के दाने की तरह मर जाना, और प्रभु की इच्छा पर चलकर बहुत फल लाना।
अपना इनकार करने के द्वारा अपना क्रूस उठाने के द्वारा हम अपनी स्वेच्छा का परित्याग करते हैं और परमेश्वर की मर्जी का जीवन अपनाते हैं। इसके द्वारा ही परमेश्वर प्रभु

कहलाता है।
प्रभु यीशु ने प्रार्थना की, हे पिता तू अपने नाम की महिमा कर, पिता ने जवाब दिया मैंने करी है और आगे भी करूँगा।
परमेश्वर को महिमा - ''मेरी नहीं पर तेरी इच्छा पूर्ण हो'' कहने से ही मिलती है।
आज सवाल है–
परमेश्वर की महिमा मुंह से हो रही है या जीवन से?

31. परमेश्वर हँसेगा

फ्रांस के प्रसिद्ध दार्शनिक और नास्तिक वोल्टेर ने - 1694-1778, में कहा था कि अगले 100 वर्षों में बाइबल का अस्तित्व खत्म हो जाएगा और कोई उसको नहीं पूछेगा।
लेकिन उसके मरने के 50 वर्ष के बाद जिनीवा बाइबल सोसायटी ने वोल्टेर का घर खरीदा और उसी के प्रिंटिंग प्रेस से हजारों बाइबल प्रिंट करना चालू कर दिया।
बाइबल का एक वचन मुझे याद आता है : ''वह जो स्वर्ग में विराजमान है, हँसेगा, प्रभु उनको ठट्ठों में उड़ाएगा'' भजन संहिता 2:4
जी हाँ इंसान की हर बगावत पर परमेश्वर को हँसी आती है।
एक और किस्सा है : रोमी साम्राज्य का निरंकुश महाराजा डाइयूक्लेशियन ने सन् 303 में सारे वचन-बाइबल, की प्रतियाँ जब्त करने का आदेश दिया था, लोगों के पास पूरी बाइबल तो नहीं रही होगी कुछ पृष्ठ या भाग मिला होगा। जिनके पास बाइबल के अंश मिले उन्हें भी यातनाएँ देकर मार डाला गया। हर जगह वचन को जलाया गया और इसके बाद उसने बाइबल की राख पर एक विजय का स्तंभ (पिलर) खड़ा किया, जिस पर लिखा था–मसीहियत का अस्तित्व मिटा दिया गया है।
परंतु इसके 20 वर्षों के बाद ही कॉन्स्टेंटीन राजा ने रोम का धर्म ही मसीहियत घोषित कर दिया और वचन फिर तैयार होने लगा और फैलने लगा।
उस समय के प्रभु यीशु के अनुयायियों ने कुछ बाइबल के अंशों के कारण अपनी जान गँवा दी थी और आज हमारे पास पूरी बाइबल होने पर भी हम उसकी कीमत नहीं समझते हैं। बाइबल के अलग-अलग वर्णन हैं, रंगीन पिक्चर बाइबल हैं, हर उम्र के लिए हैं परंतु जान देने की बात दूर है उसे पढ़ना भी नहीं चाहते।
परमेश्वर का वचन जीवित है, सत्य है और आत्मा है।
'मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा'। मत्ती 4:12
'आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परंतु मेरी बातें कभी न टलेंगी'। मत्ती 24:35

'क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव, और आत्मा को, और गांठ-गांठ, और गूदे-गूदे को अलग करके, आर-पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है'।
इस वचन का अर्थ है–कोई बाइबल पढ़ने के बाद ये नहीं कह सकता है कि मुझे पाप और पवित्रता के बीच का अंतर नहीं मालूम पड़ रहा है।
आज सवाल है–
क्या परमेश्वर का वचन कीमती है?

32. पैसे जमा कर सकता हूँ

परमेश्वर के वचन सुना सुनाकर लोगों की जेब तक पहुंच सकता हूँ।
लेकिन चुप, इसलिए कि मुझे उस समय तक अधिकार नहीं है।
जब तक मैं अपना घर, अपनी जमीन, अपनी गाड़ी, अपने घर का सामान प्रभु यीशु के राज्य और जरूरतमंदों में खर्च न होने दूं।
हाँ लोग अक्सर पूछते हैं, कि मैं लोगों से प्रभु के कार्य के लिए पैसा, दान-दक्षिणा, दसवांश इत्यादि मुद्दों पर बात क्यों नहीं करता?
(''उनका ईश्वर पेट है। और पृथ्वी की वस्तुओं पर मन लगाए रहते हैं'' फिलिप्पियों 3:19)
आज सवाल है–
प्रभु यीशु का कार्य कहीं पैसे के इर्द गिर्द तो नहीं घूम रहा?

33. पीछे मुड़कर प्रभु यीशु ने क्या देखा (लूका 14:25-27)

एक बड़ी भीड़ चली आ रही है। प्रभु यीशु को बस देखना चाहते थे, उसके चमत्कार, इत्यादि (हेरोदेस भी देखना चाहता था कुछ चमत्कारों की झड़ी)।
पीछे आ रहे थे, अनुयायी नहीं थे। अनुयायी का अर्थ है, शिष्य, जो अपने गुरु की हर बात माने और उस पर चले। प्रभु यीशु भीड़ को देखकर उत्साहित या गर्व नहीं करने लगे।
आज की मसीहियत गिनती को अहमियत देती है। सभा में 50 आते हैं तो 100 बोल देते हैं, 200 आते हैं तो 500 बोल देते हैं, 1000 आते हैं तो हजारों बोल देते हैं। वो इसलिए कि इससे मीटिंग आयोजित करने वालों (organizers) और प्रचारक (speaker) का नाम होता है।

चलिये आगे देखते हैं। प्रभु यीशु ने भीड़ को निराश सा कर दिया। कहने लगे, यदि कोई मेरे पास आये, और अपने पिता और माता और पत्नी और बच्चे और भाइयों और बहिनों को अप्रिय न जाने .....(यहां तक तो बात समझ में आती थी....)

पर वो आगे कहता गया, कि यही नहीं, पर ''अपने प्राण'' को भी ''अप्रिय'' न जाने तो मेरा चेला नहीं हो सकता (फिर वो कौन हो सकता है? मात्र एक ईसाई धर्म का रीति रिवाजों पर चलने वाला व्यक्ति... आत्मिक व्यक्ति नहीं)

उन्हें ''अप्रिय जानने'' का अर्थ है। उनकी ऐसी इच्छा जो परमेश्वर की इच्छा से मेल नहीं खाती है उसको नामंजूर करना, अप्रिय जानना।

शायद हम दूसरों की इच्छा को पहचानने में चतुर हैं। (दूसरों की आंख का तिनका हमें जल्दी दिखाई देता है, अपनी आंख का लट्ठा तो नजर ही नही आता।)

इच्छा करना = प्रेम करना (मोटे तौर पर आपको समझाने के लिए)

सबसे कठिन है 'अपनी इच्छा' को त्यागकर प्रभु यीशु की इच्छा जानना और उस पर चलना।

अपनी इच्छा को हमें क्रूसित करना है और अपने आप को हमेशा शून्य समझ कर नम्र बनकर जीना है।

इसीलिए उसने फिर कहा। 'अपना क्रूस'' उठाये और 'अपने अहं' का इनकार करे। मसीही जीवन क्रूस उठाकर प्रारम्भ होता है।

आज सवाल है–

किस को प्रिय जान रहे हो माता, पिता, पत्नी, बच्चे, भाई, बहिन या अपने आप को?

34. पवित्र आत्मा जीभ की शक्ल में आग बनकर क्यों उतरा?

कबूतर की तरह, दीपक की तरह, या फूल या फरिश्ते की शक्ल में आगमन क्यों नहीं हुआ। जीभ दिखने में कोई सुंदर अंग तो नहीं है।

सच तो ये है कि परमेश्वर मनुष्य के शारीरिक अंग का इस्तेमाल उस वक्त तक नहीं कर सकता है जब तक उसे आग में जलाकर शुद्ध न कर दे।

प्रभु यीशु के चेलों और अनुयायियों की भीड़ उसके स्वर्गारोहण के बाद 50वें दिन जिसे यूनानी भाषा में पेंटेकोस्ट कहते हैं। यरूशलेम के मंदिर में जमा थी।

साथ ही साथ हजारों तीर्थ यात्री भी सारे जगत से इकट्ठा थे। बहुत सी अलग-अलग भाषा बोलने वाले यरूशलेम में पेंटेकोस्ट का त्योहार मनाने आये थे।

प्रभु यीशु ने चेलों को उस समय तक प्रचार या सेवा करने से रोक रखा था जब तक उन्हें पवित्र आत्मा न मिले। प्रेरित 1:7 में लिखा है, ''जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे और पृथ्वी के छोर तक मेरे गवाह होंगे।''

पवित्र आत्मा के बिना हर कार्य नाकाम होता है। चाहे सांसारिक दृष्टि से कितना ही सफल दिखे।

यीशु के चेले, उसकी माता और कुल 120 जन उस अटारी में यरूशलेम में जमा थे। अचानक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, उससे सारा घर जहां वो बैठे थे गूंज गया।

और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं। और उनमें से हर एक पर आ ठहरीं। वे सब पवित्र आत्मा से भर गए।

बाइबिल में जीभ के बारे में इस प्रकार लिखा है।

जीभ एक छोटा सा अंग है। वह बड़ी बड़ी डींगें मारती है। जीभ भी एक आग है जीभ हमारे अंगों में अधर्म का एक लोक है। और सारी देह पर कलंक लगती है। और जीवन गति में आग लगा देती है और नरक कुंड की आग से जलती रहती है। जीभ को मनुष्यों में से कोई वश में नहीं कर सकता वह एक ऐसी बला है जो कभी रुकती ही नहीं, वह प्राण नाशक विष से भरी हुई है। याकूब 3:5, 6, 8

जो मुंह से निकलता है वही मनुष्य को अशुद्ध करता है। मत्ती 15:11

यदि परमेश्वर का वचन सुनाना है, गवाही देना है और पवित्रता जीवन में पाना है तो हमारी शारीरिक जीभ को भस्म करना होगा।

प्रभु यीशु के हर विश्वासी का पवित्र जीवन उसके पवित्र बोल से प्रगट होता है।

यही कारण है कि पवित्र आत्मा सांकेतिक रूप में जीभ की शक्ल में, आग के रूप में प्रभु यीशु के चेलों और अनुयायियों के ऊपर उतरी ताकि वो शारीरिक जीभ को भस्म कर पवित्रता की जीभ से बातें करें।

प्रभु यीशु ने कहा जो मुंह से बाहर आता है वही मनुष्य की अशुद्ध करता है।

आज सवाल है–

हमारे शब्द या बोल से क्या ये लगता है कि पवित्र आत्मा की आग से शुद्ध किये हुए पवित्र वचन बोल रहे हैं?

35. प्रार्थना में घुटने टेकने का अर्थ

कई साल पहले की बात है मैं मुम्बई में रह रहा था। मेरे साथ मेरा एक मुस्लिम

मित्र भी मेहमान था। कलीसिया के कुछ elders (वृद्ध) मुझे मिलने आये। जाते समय एक बुजुर्ग ने प्रार्थना की। सबने घुटने टेके और मैं और मेरा मुस्लिम मित्र आंखें बंद कर खड़े हुए प्रार्थना में शामिल हुए।

प्रार्थना खत्म हुई। बुजुर्ग विश्वासी ने सबके सुनते हुए कहा कि हमें परमेश्वर के सामने घुटने टेकने में कभी शर्मिंदगी नहीं महसूस करनी चाहिए।

उस समय मैं एक सामान्य सा विश्वासी था और मुझे थोड़ा बुरा लगा। लेकिन पवित्र आत्मा ने मुझे बोझिल किया और बताया कि सच ही तो था मैं अपने मित्र का साथ दे रहा था। और घुटने टेकने में संकोच और शर्म महसूस कर रहा था।

परिणाम ये हुआ के इसके बाद जब भी घुटने टेक कर प्रार्थना करने का मौका होता है तो मैं प्रयास करता हूँ कि घुटने टेकूँ।

यहां मैं किसी की निंदा नहीं कर रहा। मैं एक बार शिमला के माल में स्थित 150 वर्ष पुराने चर्च (कलीसिया) में प्रचार कर रहा था। एक समय शिमला भारत की ग्रीष्मकालीन राजधानी (Summer Capital) अंग्रेजों के शासनकाल में हुआ करती थी। वहां चर्च में मैंने वाइसराय की आगे वाली बेंच देखी जो अधिक खूबसूरत और कीमती थी और घुटने टेकने के लिए महंगा मलमल का कपड़ा था।

सवाल है।

क्या हमारे कपड़े खराब होने कर डर है या घुटने में दर्द होने का भय, आखिर हम झुक किसके सामने रहे हैं?

क्या वह सर्वशक्तिमान परमेश्वर नहीं जिसने अपने मुंह के वचन से सृष्टि रची?

बाइबिल में हर जगह प्रार्थना की मुद्रा घुटने पर दिखाई देती है। एक उदाहरण दानिय्येल का ही लें वो प्रधानमंत्री था।

बाबुल के 120 गवर्नर्स के ऊपर था। राजा दारा के बाद सारा साम्राज्य वही चलाता था। उसे फंसाने या दोषी साबित करने का किसी के पास कोई उपाय नहीं था। लेकिन दानिय्येल की पहचान उसके आत्मिक जीवन से थी।

वह दिन में 3 बार अपनी अटारी पर खिड़की का दरवाजा जो यरूशलेम की तरफ था उसे खोल कर रखता था और घुटने टेक कर प्रार्थना करता था। यही दानिय्येल की पहचान थी। इसीलिए उसे सिंहों की मांद में डाला गया। दानिय्येल 6।

सुलैमान राजा घुटने टेके और हाथ फैलाये परमेश्वर के सामने बैठता है। 1 राजा 8:54

आओ हम झुक कर दंडवत करें, और अपने कर्ता यहोवा के सामने घुटने टेकें। भजन 95:6

प्रभु यीशु घुटने टेक कर प्रार्थना करते हैं। लूका 22:41

स्वर्ग में तो साष्टांग प्रणाम करते हुए सभी प्राणी प्रभु के सामने दंडवत करते हैं।

प्रकाशितवाक्य 5:8-14
घुटने टेक कर प्रार्थना करने की मुद्रा क्या सिखाती है।
यही कि हम अपने आप को परमेश्वर की इच्छा के आधीन करते हैं।
फिलिप्पियों 2:10 में लिखा है कि स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल में सब यीशु के नाम पर घुटना टेकेंगे।
आज सवाल है–
क्या आज हम घुटने टेकेंगे?

36. प्रभु यीशु उद्घाटन में

प्रभु यीशु को अपने कार्यक्रमों के उद्घाटन के लिए बुलाना बंद करें।
आज मसीही जगत के बुरे हाल हैं। मसीहियत मात्र एक सामाजिक गतिविधि बन रही है। मसीह के नाम पर प्रोजेक्ट (योजना) बनाये जाते हैं, फिर मसीह यीशु को रिबन काट कर उद्घाटन के लिए बुलाया जाता है और आशीर्वाद माँगा जाता है।
यूहन्ना 5:30 का वचन याद आता है। यहाँ प्रभु यीशु कहते हैं ''मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता''
इसका अर्थ है, प्रभु यीशु इस संसार में जब मनुष्य रूप धारण करते हैं तो कोई भी काम या प्रोजेक्ट की योजना या शुरुआत खुद नहीं करते। जब तक पिता नहीं चाहें।
प्रभु यीशु ने कोई काम इसलिए नहीं किया क्योंकि उन्हें अच्छा लगा पर इसलिए कि पिता ने चाहा कि वह किया जाये।
वह आगे कहता है, ''मैं अपनी इच्छा नहीं परंतु अपने भेजने वाले की इच्छा चाहता हूँ।''
आज मसीही कार्य हमारे आर्गेनाइजेशन (संगठन) या चर्च के पैसे या बजट पर आधारित होता है।
काम प्रारम्भ करने से पहले हम परमेश्वर की योजना नहीं जानना चाहते हैं। शायद हम ये देखते हैं कि इसके लिए लोग पैसा देंगे या नहीं, हमारा नाम होगा या नहीं, या ये कि इससे हमारी इमेज या छवि बढ़ेगी अथवा नहीं।
हमारे पास कोई बोझ नहीं है बस सांसारिक सफलता चाहते हैं। प्रभु यीशु के सामने जब सारा शहर उमड़ आया था और उसके नाम की चर्चा और महिमा हो रही थी तो भी वो उसके बीच में ही उठकर पिता से प्रार्थना के लिए जंगल में चला जाता है। लूका 5:15-16
फिर लिखा है, उसने सारी रात पहाड़ पर प्रार्थना में बिताई। ताकि सुबह को अपने 12 चेले चुनने में पिता की अगुवाई मिले। लूका 6:12-13

अगर परमेश्वर के पुत्र को निर्णय लेने में इतनी अगुवाई और प्रार्थना की आवश्यकता है तो हमें कितनी है?
आज मसीही कार्य और योजनाओं (प्रोजेक्ट्स) के निर्णय घुटनों पर नहीं लिए जाते पर बोर्ड मीटिंग्स में और समर्थन (सपोर्ट) जुटाने के लिए देश विदेश में घूमते फिरते किये जाते हैं।
आज सवाल है–
कहीं आप प्रभु यीशु को अपने प्रोजेक्ट के उद्घाटन में तो नहीं बुला रहे?

37. प्रभु यीशु ''दो टुकड़े'' करता है

'जगत' जिसकी सृष्टि उस ही ने की।
सारे संसार से उसने अपार प्रेम भी किया।
लेकिन
'जब वो आया, तो इंसानों के बीच में जन्म तक नहीं लेने पाया, तब जानवरों के गौशाले में आया'।
उसने संसार के इतिहास के ''दो टुकड़े'' करे।
उसके आने के पहले BC (ईसा पूर्व) और जन्म लेने के बाद AD (आज 2017 साल हुए) पुराने और नए के बीच प्रभु यीशु दीवार खड़ी कर देते हैं।
इसी तरह अपना लहू बहाकर उसने हमारे 'पुराने पापी जीवन' और 'नए पवित्र जीवन' के बीच भी दीवार खड़ी कर दी है।
आज सवाल है–
क्या ये दीवार आपको अपने जीवन में दिखाई देती है?

38. बारह चेले कैसे चुने प्रभु यीशु ने?

''और उनसे कहा मेरे पीछे चले आओ तो मैं तुम को (मनुष्यों के पकड़नेवाले) बनाऊंगा'' मत्ती 4:19
जितना बड़ा गुरु होगा उसी के हिसाब से उसके चेले भी होते हैं। (सांसारिक दृष्टिकोण)
सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पुत्र प्रभु यीशु इस संसार में आते हैं और उन्हें 12 शिष्यों की जरूरत है तो कैसे चुनाव किया जाए?

आजकल सुना है एक छोटी सी नौकरी के लिए भी 3 इंटरव्यू होते हैं। यदि मनुष्य की बुद्धि, सांसारिक ज्ञान और तौर तरीके देखे जायें तो प्रभु यीशु का एक शिष्य शायद हारवर्ड (USA) का पढ़ा लिखा वैज्ञानिक होता, कोई शायद किसी नामी आश्रम का महंत होता, कोई बहुत सी किताबें लिखने वाला ज्ञानी होता, तो कोई नोबल शांति पुरस्कार पाया हुआ व्यक्ति होता।

कुछेक अमेरिका से तो कुछ यूरोप से तो कोई भारत या चीन से होता। वो इसलिए कि प्रभु यीशु जो सृष्टिकर्ता हैं उनके शिष्य बनने के लिए तो बहुत बड़ी योग्यता होनी चाहिए।

उन्हें कई भाषाओं में लिखना पड़ना भी आना चाहिए। बोलने की योग्यता, और प्रार्थनाओं में आगे, और मंदिर में आध्यात्मिक स्तर तो होना ही चाहिये।

पर यहां तो नजारा कुछ और ही है।

गांव के कुछ अनपढ़ से लोग जिनकी भाषा भी संवरी हुई नहीं थी। पढ़े लिखों के बीच बोलने लायक भाषा नहीं थी।

तो कौन थे वो? छोटे रोजगार में थे। कुछ मछुआरे थे। आत्मिक योग्यता तो दूर की बात, उन्हें तो छोटी सी प्रार्थना करना भी नहीं आता था। शिष्यों का चुनाव कैसे हुआ? प्रभु यीशु झील के किनारे चल रहे थे और कुछ शिष्य उन्हें वहीं मिल गए। आसपास चंद घंटों के अंदर ही उसके बारह शिष्यों का चयन हो गया।

तो सवाल ये है कि उसने इन गंवार से लगने वाले लोगों को अपना शिष्य बनाया क्यों?

क्या वे उसके, इस निर्देश का पालन बखूबी निभा सकेंगे जो उसने उन्हें दिया था कि सारे जगत में जाकर लोगों को मुक्ति और प्रेम का शुभ सन्देश सुनाओ?

क्या काबिलियत प्रभु यीशु ने इन शिष्यों में देखी थी?

सच तो ये है कि प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों का चयन उनकी योग्यता पर नहीं किया पर उनके जीवन को जीवित, और पवित्र आत्मा से भरने की अपनी सामर्थ के कारण किया।

कोई भी काबिलियत इन में नहीं थी। फिर हुआ क्या था ?

प्रभु यीशु ने उन्हें बुलाया था और एक वादा (आफर) दिया था।

वो ये कि, मेरे पीछे आओ और 'मैं' तुम्हें 'बनाऊंगा'। मत्ती 4:19

चुनते समय भले ही वे निकम्मे ओर नालायक रहे होंगे। पर प्रभु यीशु के पीछे आये तो उसने उन्हें अपनी पवित्र आत्मा का दान दिया और ऐसा बना दिया कि उन्होंने संसार को उथल-पुथल कर दिया और प्रभु यीशु कि गवाही देते-देते वे सब शहीद

भी हो गए।
ये प्रभु यीशु द्वारा पढ़ाये सिखाये जाने से शिष्य नहीं बने। पर प्रभु यीशु के पीछे चलकर उसकी आज्ञा मानकर लायक और सामर्थी बने। यूहन्ना 12:26
आज सवाल है–
क्या प्रभु यीशु ने आपको अपने पास बुलाकर, आपको बनाया है?

39. बुरा लगता है न ?

जब प्रभु यीशु कहते हैं। मेरा लहू पीना पड़ेगा। और मेरा बदन खाना पड़ेगा। तभी तुम्हारे पास जीवन होगा।
सही है।
फरीसियों और भीड़ को भी बुरा लगा था।
फरीसियों के साथ एक बहुत बड़ी भीड़ प्रभु यीशु के पीछे आ रही थी। उसकी बातों से प्रभावित थी। खुश थी। चमत्कार उन्हें अच्छे लग रहे थे।
बीमारों की चंगाई अच्छी लग रही थी। पांच रोटी और दो मछली से हजारों ने खाया था। अच्छा लग रहा था। गर्मजोशी का माहौल था।
इस बीच प्रभु यीशु ने एलान किया कि ''जीवन की रोटी में हूँ'' यूहन्ना 5:35
इसके बाद कुछ ऐसा लगा कि प्रभु यीशु ने माहौल बिगाड़ सा दिया। उसने जब कह दिया कि ''जब तक तुम मेरा लहू नहीं पीओगे ओर मेरा मांस नही खाओगे तब तक तुम्हारे पास जीवन नहीं है'' यूहन्ना 6:51-57
सभा के बाद में चेले प्रभु यीशु के पास अकेले में आये और अपनी असहमति दिखाई। बोले गुरुजी आपकी बातें कुछ सही नहीं लगीं, शब्दों का चुनाव ठीक नहीं था। आपकी बातें कुछ पसंद नहीं आईं लोगों को क्या जरूरी था ऐसे शब्दों का प्रयोग?
अब बहुत लोगों ने हमारे साथ जुड़ने का इरादा बदल दिया है। (मैंने भाग को समझने के लिए सरल करके लिखा है)
ये मांस और लहू के खाने पीने की बातें सही नहीं लगीं। ये लोग तो हम से खुश थे। हमारे साथ मिलने वाले थे। हमारी संख्या और सहयोग बढ़ जाता लेकिन आज की इस सभा ने सब बिगाड़ दिया है।
चेलों की नजर में संख्या महत्वपूर्ण थी।
फरीसियों और शहर के बड़े लोगों और भीड़ का जुड़ना उनके लिए महत्वपूर्ण था।
प्रभु यीशु की प्रतिक्रिया क्या थी?

उसने चेलों को नजदीक बुलाकर कहा। यदि तुम भी मुझे छोड़कर जाना चाहते हो तो जा सकते हो।

यूहन्ना 6 अध्याय के प्रारंभ में एक बड़ी भीड़ साथ थी जो अंत में घटकर बस दर्जन भर रह गयी। वास्तव में उसके बोलने का अर्थ ये था कि तुम्हें मेरी आज्ञाओं को मानना पड़ेगा और परमेश्वर की इच्छा पूरी करनी होगी। जिस तरह भोजन शरीर का अंग हो जाता है उसी तरह परमेश्वर की इच्छा हम करते हैं तो हम परमेश्वर का जीवन रखते हैं। यूहन्ना 4:34, में प्रभु यीशु ने यही तो कहा था, ''मेरा भोजन ये है कि मैं अपने भेजने वाले की इच्छा के अनुसार चलूं। और उसका काम पूरा करूँ।''

आज कलीसियाओं में भीड़ बढ़ाने के तरीके ढूँढे जाते हैं भले ही इसके लिए कटु सत्य को ही क्यों न शहीद करना पड़े।

आज सवाल है–

क्या यीशु का मांस खा रहे हैं और उसका लहू पी रहे हैं?

या आपको भी बुरा लगा?

40. बिना कान के मनुष्य

कान है पर सुनाई नहीं दे रहा

आंख है पर दिखाई नहीं दे रहा

ज्ञान है पर समझ नहीं आ रहा

प्रभु यीशु अक्सर कहा करते थे। जिसके कान हों वो सुन ले। (क्या बिना कान के मनुष्य वहां थे?)

परमेश्वर बहिरों को बहिरा नहीं कहता है। पर उनको जो सुनते हैं, पर अनसुनी कर देते हैं। परमेश्वर अंधों को अंधा नहीं कहता है, पर उनको जो देखते हैं पर अनदेखी कर देते हैं। परमेश्वर ज्ञानियों को ज्ञानी नहीं कहता है। जो ज्ञान से परमेश्वर को पाना चाहते हैं पर मूर्ख कहलाते हैं।

परमेश्वर उन मूर्खों को बुद्धिमान कहता है, जो परमेश्वर को बातों पर भरोसा कर, उसे जान गए हैं।

यूहन्ना 9:39, मरकुस 8:17-18, 1 कुरिन्थिओं 1:18-25

हमारी आंख, कान, व ज्ञान परमेश्वर का वचन है। यदि हम वचन के अनुसार नहीं जी रहे हैं तो परमेश्वर से हमारा रिश्ता टूटा हुआ है।

आज सवाल है–

क्या कान हैं? आंख है? ज्ञान है?

41. भूखे

'भूखे', कमजोर, कंगाल और फटेहाल कुछ लोगों की भीड़ जमीन पर सिर झुकाए एक छोटे से रेस्टोरेंट के सामने एक तंग गली में बैठी थी।

हम अपनी प्रार्थना यात्रा के दौरान तुर्कमान गेट के पास जो पुरानी दिल्ली के दक्षिण में है, जा रहे थे। हम चांदनी चौक की गलियों से गुजरते इंडिया गेट की ओर बढ़ रहे थे। अचानक रास्ते में इन लोगों की भीड़ को देखा। इनके चेहरे दुखी, निराश और किसी दयालु व्यक्ति को ढूंढ रहे थे, जो इनकी भूख मिटा सके।

देखने से लगता था, ये जिंदगी के ऐसे मकाम पर पहुंच गए थे जहाँ इस बड़े शहर में आकर सब खो बैठे।

शायद जब अपने परिवार को छोड़कर आये थे तो कुछ उम्मीदें थीं।

हम रुके इन्हें देखकर दिल दुखा, और हमने प्रेम से भरकर प्रभु यीशु के नाम का आशीर्वाद दिया और भोजन खिलाया।

क्या हमें याद नहीं कि एक समय हम भी दुखी, निराश, और रोते हुए बैठे थे, जीवन से हार चुके थे और किसी ऐसे मुक्तिदाता की आस देख रहे थे जो हमारे पाप की कीमत अदा करे? हमें नई जिंदगी का मौका दे?

''दाम देकर मोल लिए गए हो'' 1 कुरिन्थियों 6:20

''यीशु मसीह जो हम से प्रेम रखता है, और जिसने हमें अपने लहू के द्वारा छुड़ाया है'' - प्रकाशिवाक्य 1:5

आज सवाल है–

क्या हमारे व्यक्तिगत मुक्ति की कीमत अदा हो चुकी है?

42. मजदूर नहीं मैनेजर हैं

मैं अक्सर मसीही कार्यकर्ताओं और पास्टरों से मिलता हूँ जो शिकायत करते हैं कि सेवकाई तो हम कर रहे हैं पर फल नहीं आ रहा है।

नीचे प्रभु यीशु द्वारा कही गयी बात स्मरण करें।

''उसने अपने चेलों से कहा, पके खेत तो बहुत हैं पर मजदूर थोड़े हैं।

इसलिये खेत के स्वामी से विनती करो कि वह अपने खेत काटने के लिये मजदूर भेज दे।'' मत्ती 9:37-38

- पके खेत वो हैं जहाँ कटाई बस होना है।

- सब खेत पके नहीं होते हैं।
- पर बहुत से खेत हैं जो पके हैं।
- इन खेतों की खबर खेत के मालिक (परमेश्वर) को है।

आज बहुत से लोग खेत काटने तो पहुंचे हैं पर वो मजदूर नहीं है मैनेजर हैं।
और हाँ आज बहुत से मजदूर बिना मालिक के जाने ऐसे खेतों में कटाई के लिए पहुंचे हुए हैं जो न तैयार हैं और न जहाँ फसल ही है। बस मन की मर्जी चल रही है।
क्या धान को काटने रेगिस्तान या पहाड़ पर जाएंगे या नारियल हिमालय या बर्फीले इलाके में लगेंगे?
तो फिर प्रभु का काम (कटाई) अपनी मर्जी और पसंद से ऐसी जगहों में क्यों करते हैं जिसे फसल के स्वामी ने काटने को नहीं भेजा है?
योना का खेत तरशीष था, परमेश्वर का खेत नीनवे था।
तो फिर उपाय क्या है?
बस प्रार्थना करें और पूछें स्वामी से फसल और कटाई के बारे में। घुटनों पर जवाब मिलता है।
आज का सवाल है–
कहीं किसी खेत को प्रभु का (पका हुआ) समझ कर हम अपनी अकल लगाते हुए अपने प्रयास से मेहनत तो नहीं कर रहे?
गलत समय, गलत जगह और गलत तरीका। काम न आये।

43. मुँह में यीशु, बगल में छुरी

मेरे इस मुहावरे को सुनकर आपके मुँह में कुछ और आ रहा होगा, लेकिन मैं चाहता हूँ कि आप हिंदी के इस नए मुहावरे को सीख लें।
आज मसीही जीवन की बोल और चाल में दुनिया को अंतर दिखता है।
बाइबल में लिखा है, अन्तिम दिनों में कठिन समय आएंगे। क्योंकि मनुष्य भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उसकी शक्ति को न मानेंगे; ऐसों से परे रहना। - 2 तीमुथियुस 3:5
प्रभु यीशु अपने आप को मसीही कहने वालों से कहते हैं, जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, क्यों कहते हो? - लूका 6:46
प्रेरितों के काम में लिखा है, परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।

तुम पवित्र आत्मा पाओगे तो सामर्थ पाओगे और जगत के छोर तक मेरे गवाह ठहरोगे। प्रभु यीशु के जीवन और सामर्थ के गवाह - सभाओं (मीटिंगों) में चिल्लाने के द्वारा गवाह नहीं बनते हैं पर प्रभु यीशु अपनी आत्मा की मौजूदगी के द्वारा उनके जीवन में हर समय प्रगट होते हैं।

सच तो कहा था प्रभु यीशु ने, जो मुझ पर विश्वास करेगा, जैसा पवित्र शास्त्र में आया है उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेंगी। यूहन्ना 7:38

सवाल है–

कहीं मुँह में यीशु और बगल में छुरी का नया मुहावरा हमारे जीवन की ओर इशारा तो नहीं करता है?

44. मैं उसे नहीं जानता - लूका 22:57

उस काली रात को जब गतसमने के बाग में डरे और थके हुए चेलों के साथ प्रभु यीशु अपनी अंतिम रात परमेश्वर पिता के साथ विनती और प्रार्थना में और पिता की इच्छा में अपने जीवन समर्पण कर रहे थे। तो उसके चेले सो रहे थे, 3 बार वो उनके पास आया प्रार्थना और जागते रहने का आग्रह किया लेकिन वे सोये रहे। मत्ती 26:36-46

कारण क्या था? समय की गंभीरता और प्रभु यीशु की मुक्ति योजना को समझ नहीं पा रहे थे। लेकिन जब फरीसी और उनके रोमी सैनिक लाठी, खंजर, भाले और भीड़ लेकर पहुंचे तो तलवारें चल गयीं।

तलवार चला कर और अंधेरे में पीछे-पीछे कैफा महायाजक के भवन तक पहुंच कर शायद पतरस सोच रहा था कि मसीह के पीछे चलना यही है।

उस समय सवाल पूछा गया क्या तू भी उनमें से एक है?

जवाब - मैं उस आदमी को नहीं जानता।

लेकिन प्रभु यीशु की आंखों ने मुड़कर कहा कि तीन बार मुझे न जानने की कसम खाने के बावजूद मैं तुझे जानता हूँ। और जगत की उत्पत्ति से पहले जानता हूँ।

आज लाखों विश्वासी हारा हुआ मसीही जीवन, डर और शर्म संकोच का जीवन जी रहे हैं। सांसारिक गतिविधियां, सामाजिक कार्य, व्यवसाय और अपनी व्यस्तता के पर्दे के पीछे छिपे रहते हैं।

आज भारत उस यीशु मसीह को ढूंढ़ रहा है जो जमीन पर बैठकर अपने शिष्यों के पांव धोता है।

कोड़ियों को गले लगाता है। नीच जाति मानी जाने वाले सामरिओं के घर में रहता है। वह

जो कंगाल बनकर कुचले, बंधुओं और अंधों के पास आया है।
जिसने दुश्मनों के लिए अपने प्राण दिए। शत्रुओं से प्रेम रखने का आदेश दिया। कहा जो श्राप दे उनको आशीष दो, जो सताएं उनके लिए प्रार्थना करो।
लोग हमसे जानना चाहते हैं और हम अपनी कथनी और करनी और मौन से दिखाते हैं कि हम उसे जानते ही नहीं।
यदि भारत में जीवित यीशु की खुशखबरी घर-घर तक लाना है तो शर्म और डर को दूर करना होगा। और ये हमारी ताकत से नहीं पर पवित्र आत्मा की भरपूरी से होगा।
''जब पवित्र आत्मा आएगा तो तुम सामर्थ पाओगे और मेरे गवाह ठहरोगे।'' - प्रेरित 1:8
आज सवाल है–
क्या तुम भी यीशु के साथ रहने वालों में से एक हो?
या यीशु को बस हम चर्च (कलीसिया) के अंदर, अपने घर में, चमत्कारी महासभाओं में ही जानते हो?

45. मैं नही हूँ

कभी लोग मेरे बारे में भी जानना चाहते हैं, कि आखिर मैं हूँ कौन?
बिशप हो? पास्टर हो? प्रचारक हो? किस संस्था से जुड़े हो?
क्या मसीही शिक्षा (doctrine) को मानते हो? किस मसीही संप्रदाय (denomination) के हो? या फिर बेरोजगार हो?
सुनिये, मेरी मसीही शिक्षा (doctrine) ये है कि मैं बाइबिल में लिखी हर बात पर विश्वास करता हूँ और मेरा भरोसा परमेश्वर पर है।
साधारण सी बात मुझे समझ में आती है जो प्रभु यीशु ने कही, ''यदि कोई मेरे पीछे आये तो अपने आप का इनकार करे, और अपनी सलीब हर दिन उठाये।'' लूका 9:23
वह शून्य बन गया था। फिलिप्पियों 2:7
यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का जवाब तो सही था।
यूहन्ना 1:19-23
यहूदी धार्मिक के लोग उनके पास आये और पूछने लगे। आप हो कौन?
क्या मसीह हो? उसने कहा, मैं नहीं हूँ।
क्या एलिय्याह हो? उसने कहा, मैं नहीं हूँ।
तो क्या वो भविष्यद्वक्ता हो? उसने कहा, मैं नहीं हूं।
तो फिर आप हो कौन?

आसानी से लोग यूहन्ना का पीछा छोड़ने को तैयार नहीं थे।
वो चाहते थे कि एक आजाद व्यक्ति को किसी न किसी तरह चार दीवारी में वर्गीकृत करें और फिर उसका विरोध करें और सताएं।
तब यूहन्ना का जवाब आता है। बस मैं एक 'आवाज' (voice) हूँ।
आज यदि हम शून्य बनकर बस एक आवाज रह जायें तो कैसा होगा?
आज संसार में 'मैं कुछ भी नही हूँ' बोलना एक कमजोरी माना जाता है लेकिन प्रभु यीशु की यूहन्ना के बारे में गवाही थी, कि 'स्त्रियों से जन्मे लोगों में यूहन्ना से बड़ा कोई नहीं था।'
आज सवाल है–
आप हैं कौन?

46. मैं भी रोया

हजरतबल (श्रीनगर कश्मीर) के बाहर मैं खड़ा हुआ था।
रास्ते के पास के द्वार (गेट) की सलाखों को पकड़े एक महिला जोर से चिल्लाकर रोने लगी, और अपने दर्द की दास्तान बोलती रही।
उसका दर्द, दुख क्या था, उसके परिवार का कोई बच्चा हिंसा में मारा गया, शायद विधवा थी, उसके ऊपर गरीबी, असहाय अकेली उसके आंसुओं के पीछे की सब तस्वीरें मेरी आँखों के सामने आयीं।
मुझे याद आया, वो मौका जब लाजर कब्र में दफन था, मार्था और मरियम ने आंसुओं के साथ शिकायत की थी, कि ''यदि तू यहां होता तो मेरा भाई ने मरता।'' सच ही तो कहा था उन्होंने, लेकिन सब लोग जब रो रहे थे, और उनके सामने छाती पीट कर मातम कर रहे थे तो, प्रभु यीशु के शब्द किसी को सुनाई न दिए हों?
जब उसने कहा,
''पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूँ, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा, और जो कोई जीवित है, और मुझ पर विश्वास करता है वो अनंतकाल तक न मरेगा।'' यूहन्ना 11:25, 26
उस समय यीशु क्यों रोया?
उसे तो मालूम था कि चंद मिनटों में लाजर को वो जीवित करेगा। लेकिन यहां प्रभु यीशु लोगों की असहाय स्थिति, अंधापन, निर्बलता, अज्ञान, दुख, दर्द और परमेश्वर से संबंध रहित जीवन को देखकर रोये थे।

'जीवनदाता सृष्टिकर्ता' उनके सामने खड़ा था, फिर भी वे उसे देख नहीं पा रहे थे। (कितने दुख की बात है)
मनुष्य की इस दर्दनाक अवस्था को देख प्रभु यीशु रो पड़े।
(बिन चरवाहे की भेड़ें, मत्ती 9:36)
'मैं इसलिए रोया' क्योंकि मैं जानता था, प्रभु यीशु ने कहा ''द्वार मैं हूँ'' पर ये महिला उस द्वार तक नहीं पहुंच पाई थी। काश ...
आज सवाल है–
आप कब रोते हैं?

47. मार खाते खाते मर गए

नये नियम में विश्वासी अपनी रक्षा या बचाव की प्रार्थना करता हुआ नजर नहीं आता है। (उन्होंने अपना छुटकारा न चाहा। इब्रानियों 11:35-39)
(जैसा कि पुराने नियम में हर जगह दिखाई देता है)
जो पुराने नियम की ''रक्षा या बचाव'' की प्रार्थनाएं हैं वो नये नियम के ''पाप, संसार, व शरीर'' पर विजय की प्रार्थना की - आत्मिक तस्वीर है।
प्रभु यीशु ने पतरस के भविष्य के बारे में कहा था कि ''शैतान ने तुम लोगों को मांग लिया है ताकि गेहूं की तरह फटके (सताव लाये), पर मैंने तुम्हारे लिए विनती की है कि तुम्हारा 'विश्वास' जाता न रहे'' लूका 22:31-32.
पतरस के 'शरीर' को नहीं बचाना है, पर उसके 'विश्वास' को बचाना है।
'शरीर' की अब कीमत नहीं है, हमारी 'आत्मा' की कीमत है। यूहन्ना 6:63
पुराने नियम में अधिकतर देखा जाता था कि शारीरिक शक्ति, धन और बल द्वारा परमेश्वर की आशीषें नापी जाती थीं। लेकिन नये नियम में आशीषें ''आत्मिक जीवन की उन्नति'' हैं। ''धन्य है वह मनुष्य जिसे परमेश्वर पापी न ठहराए।'' रोमियों 4:8
पौलुस कहता है, मैं संसार के लिए क्रूसित हुआ और संसार मेरे लिए क्रूसित है। गलातियों 6:14
इब्रानियों की किताब 11 अध्याय में परमेश्वर पर विश्वास (भरोसा) करने वालों की लिस्ट है।
पहले पद 1-34 तक पुराने नियम के उन संतों की लिस्ट है। जिन्होंने परमेश्वर पर भरोसा रखकर संसार में, युद्ध विजय, संतान प्राप्ति, अग्नि विजय, सिंहों के मुंह बंद किये, इत्यादि।

लेकिन पद 35 से 39 तक हम एक दूसरी लिस्ट देखते हैं जहां किसी का नाम नहीं लिखा है (ये नये नियम के विश्वासियों की लिस्ट है) पर उनकी खासियत ये है कि इन्होंने परमेश्वर पर विश्वास किया, और सताव स्वीकार करके और अपनी जान गंवाकर विजय प्राप्त करी।

कोड़े खाये, कैद हुए, पत्थरवाह किये गए, आरे से चीरे गए, जंगलों में भेड़ बकरियों के खालें पहने भटके। मार खाते खाते मर गये। और छुटकारा न चाहा।

पुराने नियम का व्यक्ति जान बचाना चाहता था। लेकिन नये नियम का व्यक्ति क्रूस उठाकर चलता है। और अपने प्राण खोकर जीवन प्राप्त करता है। यही अंतर है पुराने नियम के जीवन में ओर नये नियम के जीवन में।

प्रभु यीशु कहते हैं, संसार में तुम्हें दुख संकट आएंगे, व्याकुल न हो मैंने जगत को जीत लिया है। यूहन्ना 16:33

कैसे जीता? जान बचाकर नहीं, जान देकर।

लिखा है संसार उनके लायक नहीं था (इसका अर्थ है, संसार की किसी भी चीज की उन्हें चाहत नहीं थी) यही मसीही जीवन होना चाहिए।

यदि आज हमें प्रभु यीशु की महिमा दिखाई देगी, तो संसार की हर वस्तु नाचीज लगेगी।

शारीरिक दुख निवारण ही हमारा पहला उद्देश्य नहीं है।

शैतान पर विजय और परमेश्वर की इच्छा पूरा करना हमारे जीवन का मकसद है।

आज सवाल है–

क्या आपके नजरिये में संसार क्रूसित है?

48. मौत से मुनाफा

दो विपरीत (opposite) सोच

फरीसी धर्मगुरुओं की सोच

प्रभु यीशु के साथ-साथ लाजर को भी कत्ल करेंगे। नहीं तो सारा जगत उसके पीछे चल पड़ा है, और उस पर विश्वास कर रहा है। (उसके पंथ का नाश करेंगे)-यूहन्ना 12:10, 11,1 9

इसके विपरीत (opposite view)

'प्रभु यीशु की सोच, जब गेहूँ का दाना (यीशु, विश्वासी) मर जाता है, तो बहुत फल लाता है।

मैं ऊंचे पर चढ़ाया (क्रूस की मौत) जाऊंगा, तो सब को अपने पास खींचूंगा (बहुत विश्वास लाएँगे) - यूहन्ना 12:24, 32
आज सवाल है–
क्या 'जान देने' के मुनाफे को समझ रहे हैं?

(धर्म परिवर्तन का सवाल?)

49. मुक्ति चाहिये है, धर्म नहीं

क्या मुझे धर्म परिवर्तन करना होगा?
किसी ने मुझ से सवाल किया था
मैं मोक्ष पाना चाहता हूँ मुझे क्या ईसाई बनना पड़ेगा?
मेरा जवाब
हमें क्या चाहिए धर्म या मुक्ति (मोक्ष)?
यदि धर्म चाहिए तो वो प्रभु यीशु के पास नहीं है।
यदि मुक्ति चाहिए तो प्रभु यीशु बुलाते हैं
प्रभु यीशु ने कहा–मार्ग, सत्य और जीवन मैं हूँ यूहन्ना 14:6
ये धर्म का चुनाव नहीं है। ये मोक्ष मार्ग का चुनाव है, सत्य का चुनाव है, मृत्युंजयी जीवन का चुनाव है।
प्रभु यीशु ने मत्ती 23:15 में यहूदी धर्म गुरुओं से कहा, तुम समुन्दर पार एक व्यक्ति का धर्म परिवर्तन कराने जाते हो और उसे अपने आप से दो गुना अधिक नारकीय बना देते हो. मोक्ष तो दूर है उसकी आत्मा भी नष्ट हो जाती है।
इसका अर्थ है प्रभु यीशु ने धर्म परिवर्तन का काम नहीं सिखाया
ऐसा क्यों?
वो इसलिए की धर्म, मनुष्य द्वारा मुक्ति पाने का असफल प्रयास है।
लेकिन यदि परमेश्वर स्वयं हमारे बीच में मुक्ति देने आ जाते हैं तो हमें धर्म नहीं चाहिए, मार्ग, सत्य और जीवन चाहिए
धर्म के पहले परमेश्वर है, और धर्म व संसार के अंत हो जाने पर भी परमेश्वर अस्तित्व में रहेंगे।
ईसाई धर्म प्रभु यीशु ने प्रारंभ नहीं किया
प्रभु यीशु के बलिदान और स्वर्गारोहण के 300 साल बाद ये महाराजा कोंस्तांतिने ने बनाया।
बाइबिल में धर्म शब्द नहीं है न ही प्रभु यीशु ने इस शब्द का प्रयोग किया है।

बाइबिल धर्म शास्त्र नहीं है पवित्र शास्त्र है।
प्रभु यीशु आप को धर्म में नहीं बुलाते हैं पर मुक्ति दान देने के लिए अपने पास बुलाते हैं और कहते हैं - मोक्षमार्ग, सम्पूर्ण सत्य और मृत्युंजयी जीवन में हूँ।

धर्म के ठेकेदारों को उन्होंने कपटी कहा

ये जो शिक्षा देते हैं उस पर खुद अमल नहीं करते
रीतिरिवाज और त्योहारों पर जोर देते हैं लेकिन सत्य को लोगों से छिपा कर रखते हैं
धर्म ग्रन्थ का पाठ और रटीरटाई प्रार्थना, शारीरिक प्रयासों से आत्मिक मुक्ति दिलाने का झूठा वादा करते हैं।
प्रभु यीशु ने कहा मुक्ति के लिए परिश्रम करने वालो और पाप के बोझ से दबे हुए लोग मेरे पास आओ में तुम्हें मोक्ष दूंगा।
धर्म परिवर्तन नहीं करिये, लेकिन मोक्ष अवश्य प्राप्त करिये

धर्म अनेक हैं पर मोक्षदाता बस एक हैं–प्रभु यीशु।

आज सवाल है–
धर्म चाहते हो या मुक्ति?

50. मनुष्य का पुत्र

प्रभु यीशु ने अपना क्या 'नाम' पसंद किया?
क्या आपने इस बात पर गौर किया है कि प्रभु यीशु अपने आपको कैसे संबोधित करते थे।
जी हां - ''मनुष्य का पुत्र''
''मनुष्य का पुत्र'' - 69 बार सुसमाचार में आया है।
आखिर इसका मतलब क्या है। सर्वशक्तिमान सनातन परमेश्वर का पुत्र जिसने अपने वचन की सामर्थ से सारी सृष्टि/ब्रह्मांड की रचना करी और अपने वचन की सामर्थ से उसे थामे हुए है। इस संसार में आते हैं और छोटे से छोटे मनुष्य से संगत चाहते हैं। (जैसा मसीह यीशु के स्वभाव था। वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो। उसने अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया और दास का स्वरूप धारण किया। और मनुष्य की समानता में हो गया। फिली. 2:5, 7)
यही कारण था कि वो:
- गांव व छोटी बस्तियों में रहा।
- दुखी, बीमारों, लाचारों के पास गया।

- गरीबों की शादियों में गया।
- गांव में टेबल और कुर्सियां बनाई।
- धूल भरे रास्तों में पैदल चला।
- उनके साथ रोया।
- कंगालों, अंधों, बंधुओं, और कुचले हुओं को खुशखबरी लाया।

एक आम आदमी बना, अच्छा लगता था उसे अपना ये नाम –मनुष्य का पुत्र
मुझे भी अच्छा लगता है। मेरे पास आया, मेरा हमशक्ल बना, मेरा नाम लिया, मेरे साथ रोया। यहां तक साधारण दिखा कि पुनरुत्थान के बाद गतसमने के बाग में मरियम को वो एक साधारण सा बाग का 'माली' नजर आया।
आज सवाल है–
क्या आज हम आम आदमी बनकर दुनिया में दुखी निराश कमजोरों के पास जाकर उनसे प्रभु # यीशु सा प्रेम करेंगे।

51. मौत है?

विश्वास की आखिरी कीमत 'मौत' है - प्रकाशितवाक्य 2:10
आज्ञाकारिता की आखिरी कीमत 'मौत' है - फिलिप्पियों 2:8
प्रेम की आखिरी कीमती 'मौत' है - यूहन्ना 3:16
इसी कारण प्रभु यीशु ने कहा है
यदि कोई मेरे पास आये और अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता - लूका 14:26
आज सवाल है–
हम क्या कीमत अदा कर सकते हैं?

52. लज्जा

पहला आदम पाप के कारण नंगा था।
दूसरा आदम धार्मिकता का उज्ज्वल वस्त्र धरे था।
लेकिन पहले आदम को वस्त्र पहनाने के लिए क्रूस पर नग्न किया गया।
गहरे खूनी जख्म, हृदय वेदना, निंदा, अपमान उठाता हुआ क्रूसित मुक्तिदाता यीशु।
आज सवाल है–
क्या इस यीशु को क्रूस पर देखा है? और फिर भी विचलित नहीं हुए?

53. सत्याग्रह नहीं किया था मूसा ने

(इस्राएली लोग मिस्र में पर्यटक (टूरिस्ट) बनकर नहीं गए थे पर रोटी, कपड़ा और मकान की मजबूरी उन्हें मिस्र ले आयी थी। लेकिन समय चलते मिस्रिओं ने उन्हें अपना गुलाम बना लिया था।)

तो वे आजाद (Independent) कैसे हुए?

क्या मूसा ने कोई आंदोलन छेड़ा? क्या मूसा ने कोई चुनाव जीता? क्या मूसा में नेता के कोई गुण थे? क्या मूसा के पास धन या राजनीतिक शक्ति थी?

जी नहीं।

मूसा समाज और कानून से भागा हुआ एक कातिल था जिसे परमेश्वर ने बदल दिया। 40 साल से जंगल में अपने ससुर की भेड़ चराता था और जब परमेश्वर ने उसे आजादी का नेतृत्व करने के लिए बुलाया, तब वह 80 वर्ष का वृद्ध था। लोगों की बगावत का सामना करने की ताकत उसके पास नहीं थी। भाषण बाजी नहीं कर पाता था। तो फिर कैसे आजादी मिली ?

लिखा है, ''मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ। जो तुझे दासत्व के घर अर्थात मिस्र देश से निकाल लाया हूँ।'' निर्गमन 20:2

दूसरे शब्दों में, मिस्रियों के और फिरौन के पहिलौठों को उस रात मैंने मारा था।

लाल समुंदर को दो टुकड़े कर मैंने पार लगाया था। फिरौन की सेना और उनके रथ, घोड़ों को लाल समुंदर में मैंने डुबोया था। आसमान से हर रोज 40 साल तक रोटी मैनें गिराई थी। मरुस्थल में चट्टान से पानी निकाल कर मैंने प्यास बुझाई थी। तुम्हारे सारे दुश्मनों को तुम्हारे सामने मैंने मारा था। तुम्हारी सारी लड़ाइयां मैंने लड़ी थीं। लेकिन ये सारे काम करने के बाद भी उन 40 सालों के दौरान वह उनसे नाराज था। इब्रानियों 3:17

क्योंकि सच तो ये था कि वे आजाद होना ही नहीं चाहते थे। कई बार उन्होंने वापस लौट जाना चाहा। तो निष्कर्ष क्या है।

पाप और उसके परिणाम का एक ऐसा चक्रव्यूह है जिसमें पड़कर हम, हमारा परिवार, समाज और देश बंधुआ बन जाता है।

प्रभु यीशु ने कभी भी रोमी सरकार या किसी सरकार के बारे में राजनीतिक विचार नहीं दिया। क्योंकि हमारी समस्या सरकार नहीं, कानून नहीं, परन्तु पाप है।

#प्रभु #यीशु (#Jesus #Christ) ने कहा, जो कोई पाप करता है वो पाप का गुलाम है। - यूहन्ना 8:34
ये भी कहता है, तुम सत्य (प्रभु यीशु) को जानोगे और सत्य (प्रभु यीशु) तुम्हें स्वतंत्र करेगा। - यूहन्ना 8:32
जी हाँ, धर्मों के जाल से, संसार के मायामोह से, शैतान के बहकावे से, और मौत के खौफ से आजाद करके वो हमें परमेश्वर के राज्य में ले आता है।
आज सवाल है–
किस गुलामी से मुक्त हुए हैं?

54. साइमन वाईसंथाल (Simon Weisanthal) खामोश क्यों?

जर्मन नाजी कॉन्सन्ट्रेशन कैम्प (Nazi concentration camp) की उस घटना के बारे में वे लिखते हैं (in his book 'The Sunflower') – हिटलर की नाजी जर्मनी का एक सैनिक अस्पताल में मर रहा था। अंतिम मौके पर उसने एक अपनी इच्छा जाहिर की। एक यहूदी से मिलने की इच्छा।
तब साइमन वाईसंथाल को सैनिक के पास लाया गया। नाजी सैनिक ने 'यहूदी साइमन' से मिलने का कारण बताया।
उसने कहा कि मैंने बंद कमरों में रखे गए 300 यहूदियों के आवास में आग लगा दी थी, और जब कुछ लोग खिड़कियों से कूदकर भागने लगे, तो मैंने उन्हें गोलियों से भून दिया था। मैं इस नरसंहार के लिए किसी यहूदी से मरने के पहले माफी चाहता हूं।
क्या आप मुझे माफ करोगे?
थोड़ी देर कमरे में खामोश रहने के बाद साइमन वाईसंथाल कमरे से निकल गया?
(काश उस सैनिक ने प्रभु यीशु को बुलाया होता)
उस किताब के नई एडिशन में दुनिया के बहुत से नामी लोगों से सवाल किया गया है कि क्या साइमन वाईसंथाल को माफ कर देना था?
जिसमें से अधिकांश ने कहा है–माफ नहीं करना चाहिये।
घटना पुरानी है लेकिन, मनुष्य की असहाय स्थिति को देखकर आज भी रुला देती है। यदि साइमन वाईसंथाल माफ कर देता तो अच्छा होता, वह सारे मारे गए यहूदियों की माफी तो उसे नहीं दे सकता था, पर अपने जख्म और पीड़ा के लिए व्यक्तिगत माफी दे सकता था।

प्रभु यीशु ने इस जग में रहते हुए जब लोगों से कहा, जाओ 'तुम्हारे पाप माफ हुए' तो ये कैसे किया?
हर पाप परमेश्वर के खिलाफ होता है। और यदि प्रभु यीशु हमारे हर पाप क्षमा करते हैं तो यही साबित करते हैं कि वो परमेश्वर हैं।
''जिसने मुझे देखा है उसने परमेश्वर को देखा है'' यूहन्ना 14:9
''ताकि तुम यह जान लो की मनुष्य के पुत्र को इस संसार में पाप क्षमा करने का भी अधिकार है'' मरकुस 2:10
आज सवाल है–
कहीं आप खामोश रहकर कमरे के बाहर तो नहीं जा रहे?

55. सवाल बदल गया है

पहले चेलों से सवाल कुछ और था। उसने पूछा था।
'तुम मेरे बारे में क्या कहते हो, कौन हूँ?'
उनका जवाब था–तू जीवित परमेश्वर का पुत्र मसीह है। मत्ती 16:16
(दुष्टात्माएं भी जानती हैं और थरथराती हैं। याकूब 2:9)
जवाब सही है–लेकिन बस 'ज्ञान' से आया है।
ज्ञान और जीवन में संबंध आवश्यक नहीं होता है।
प्रभु यीशु के पुनरुत्थान के बाद उसने अपना नया सवाल दर्ज किया यूहन्ना 21:15
'क्या तुम मुझ से प्रेम करते हो?'
(इसका जवाब आसान नहीं था, क्योंकि जवाब के पीछे पतरस की मौत छिपी थी। यूहन्ना 21:19)
ये सवाल ज्ञान का नहीं है। प्रेम का है।
सवाल 'रिश्ते' का है।
इस सवाल का जवाब 'दिमाग' से नहीं 'दिल' से देना है।
चेले यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद फिर से मछली पकड़ने के लिए चले जाते हैं। 'पुराने जीवन' में लौट जाते हैं।
क्या हुआ, जान देने के वादों का? प्रभु यीशु कहते हैं–
'यदि तुम प्यार करते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे
'यदि तुम प्यार करते हो, तो अपनी खुदी का इनकार करोगे
'यदि तुम प्यार करते हो, तो अपना क्रूस उठाओगे

'यदि तुम प्यार करते हो, तो मेरे पीछे आओगे
यदि नहीं–
तो प्रेम नहीं है, बस ज्ञान है।
जीवन नहीं है, बस धर्म है।
मुक्ति नहीं है, बस क्रिया कर्म है।
ज्ञान हमें कहीं नहीं पहुंचाएगा।
(ईसाई परिवार में पैदा होना या मात्र ईसाईयत की धर्म विधि पालन करना ज्ञान है)
प्रभु यीशु से रिश्ता बनाइये।
आज सवाल है–
क्या प्रभु यीशु से प्रेम करते हैं?

56. वह धूल में क्या लिख रहा था

(रहस्य?)

फरीसी धर्मगुरु एक स्त्री को यीशु के पास लेकर आते हैं जो व्यभिचार में पकड़ी गई थी। मंदिर के मैदान में प्रभु यीशु धूल पर बैठे कुछ लोग जो वहां एकत्र हुए थे उनको उपदेश दे रहे थे।
(याद रहे कि प्रभु यीशु धर्मगुरुओं और लोगों के बीच इतने बड़े नहीं माने जाते थे, कि उन्हें मंदिर के अंदर किसी कोंस हॉल या कमरे में बैठकर उपदेश देने की इजाजत दी जाती) यूहन्ना 8
मूसा का कानून कहता है (व्यवस्था) कि ऐसी स्त्री को पत्थरवाह करके मार देना चाहिये, इसमें आपकी क्या राय है?
उनके सवालों को नजर अंदाज करते हुए प्रभु यीशु, जमीन पर बैठे हुए धूल पर अपनी उंगलियों से कुछ लिखने लगे, तब बार-बार पूछने पर वे उनकी ओर देखकर बोले, ''तुममें जो निष्पाप हो वही पहले उसको पत्थर मारे।''
और फिर से झुककर वे लिखने लगे।
''सवाल ये है कि वह अपनी उंगलियों से क्या लिख रहे थे?''
किसी को नहीं मालूम न मुझे मालूम है लेकिन मैं वचन में लिखे कुछ हादसों से उन लिखे शब्दों को ढूंढने की कोशिश करता हूँ।
इस हादसे में प्रभु यीशु जज भी बने और साथ-साथ वकील भी
उंगलियां??

जब भी परमेश्वर की उंगलियां लिखती हैं, तो वो मनुष्य के खिलाफ एक फैसला (verdict) होता है वो मनुष्य को अपराधी और अधर्मी घोषित करता है। और मनुष्य भागने लगता है। कुलुस्सियों 2:14

चलिए ये 3 मौकों में क्या हुआ।

1. सीनाई के पहाड़ पर 40 दिन तक मूसा रहा। वहां परमेश्वर ने अपने उंगलियों से 10 आज्ञाएँ लिखकर दे दी। निर्गमन 31:18

और ये कैसी विडम्बना है कि जब वह आज्ञा मूसा के हाथ में आयी थी उसी वक्त इस्राएली पहाड़ के नीचे सोने के बछड़े को बनाकर उसको अपना ईश्वर पुकार रहे थे। कह रहे थे कि यही उन्हें मिस्र से निकालकर लाया है। मूर्ति पूजा कर रहे थे, साथ ही सेक्स के पाप में भी सारी भीड़ उलझ गयी थी।

परमेश्वर ने मूसा से कहा नीचे जा और देख तेरे लोग क्या कर रहे हैं।

नीचे जाकर मूसा ने क्रोध में आकर दस आज्ञाओं की पट्टियां तोड़ दी।

मनुष्य की बगावत की तस्वीर है, आज्ञा तोड़ने की तस्वीर है। और ये लिखी आज्ञाएँ उन्हें दोषी ठहरा चुकी, अधर्मी ठहरा चुकी।

2. बेल्शेजर बेबीलोन का राजा था, नबुकद्नेसर का बेटा था। यरुशलम को तबाह करके, मंदिर के सारे सोने और चांदी के बहुमूल्य बर्तन लेकर नबुकद्नेसर बेबीलोन आ गया। बेल्शेजर ने बड़ी जेवनार की 1000 बड़े अधिकारियों को बुलाया और इन पवित्र बर्तनों में शराब पी और अपने देवताएँ को महिमा दी।

अचानक महल की दीवार में उंगलियां दिखीं और लिखने लगी। बेल्शेजर के अपराध का फैसला

''मने मने तकेल उपर्सीन'' दानिएल 5:7

किसी को समझ न आया, बेल्शेजर भयभीत हुआ उसके पाँव कांपने लगे। दानिएल को बुलाया गया जिसने अर्थ बताया।

मने - तू गिना गया और गिनती कम निकली।

तकेल - तू तौला गया है और हल्का निकला।

उसी रात बेल्शेजर का कत्ल हुआ और फारसी राजा दारा ने साम्राज्य जीत लिया।

3. फैसला व्यभिचारिनी के खिलाफ या धर्म गुरुओं के खिलाफ तो अब प्रभु यीशु की उंगलियों ने क्या लिखा?

शायद वही लिखा जो बाबुल की महल की दीवार पर लिखा, उनके धूल के विवेक पर लिखा जो थोड़ी हवा चलने पर मिट जाता है।

''मने मने तकेल''

फरीसी पहचान गए और सीधा होकर यही कहा–तुम में जो वजनदार (धर्मी) हो वो उसे पहले पत्थर मारे।
मने मने तकेल–याने तुम सब भी अपराधी और अधर्मी पाए गए हो
अंजाम–पत्थर छोड़कर वे भाग गए।
परमेश्वर की उंगलियां जब लिखती हैं तो कौन खड़ा रह सकता है?
आज सवाल है–
उसकी उंगलियां आपके दिल में कुछ लिख रही हैं?

57. परमेश्वर और धन में समानता है

(आगे पढ़ें 'धन' की परिभाषा और परिणाम)

वह ये कि भरोसा दोनों में से बस एक पर ही किया जा सकता है।
प्रभु यीशु कहते हैं–''तुम परमेश्वर के साथ-साथ धन की भी सेवा नहीं कर सकते'' मत्ती 6:24
भरोसे के मामले में मुकाबला परमेश्वर और शैतान के बीच नहीं है, पर परमेश्वर और धन के बीच है।
इसका अर्थ है आपके जीवन में जिस तख्त पर परमेश्वर को बैठना चाहिए वहां पर आप धन को बैठा सकते हैं।
एक जीवित है तो दूसरा बेजान (मूरत समान)
तो आखिर ''धन'' की परिभाषा क्या है?
धन वह 'शक्ति' है जो हमें हर स्थिति का सामना करने और संसार में सफल होने का 'झूठा' भरोसा दिलाती है।
धन = पैसा + संपत्ति + ज्ञान + शिक्षा + परिवार + धर्म + कर्म + तंत्र + सामाजिक पहुंच + राजनीतिक पहुंच।
परमेश्वर का वचन कहता है 'धन' के पंख होते हैं और वह पक्षी की तरह हमारे पास से उड़ जाता है। नीतिवचन 23:5, हमारा भरोसा भी हवा में उड़ जाएगा।
तो परिणाम क्या होता है?
धन हमें कबर तक तो सही सलामत पहुंचा देगा, ऊपर शायद मकबरा भी बनवा दे।
या हमारी चिता की लकड़ियां सजवा दे।
या ईसाई कब्रिस्तान में हमारे लिये संगमरमर का क्रूस लगवा दे।
लेकिन उसके आगे धन की पहुंच नहीं है।

धन शक्ति है, मनुष्य का प्रयास है, सामर्थ है, मनुष्य द्वारा उपजाया हुआ फल है। जिसे कीड़े खा लेते हैं।
धन हमारे शरीर और स्वार्थ को खड़ा करता है।
धन पर भरोसा हमें पाप से मन फिराने या मुक्ति दिलाने में काम नहीं आता है।
प्रभु यीशु क्या दावा करते हैं?
''मैं ही पुनरुत्थान और जीवन हूँ जो कोई मुझ पर भरोसा करता है वो मृत्यु वश नहीं होता पर शाश्वत जीवन पाता है।''
आज सवाल है–
भरोसा किस पर है?

58. जलता हुआ दीपक

(क्या मतलब है)

प्रभु यीशु यूहन्ना के बारे में कहते हैं, वह तो 'जलता' और 'चमकता' हुआ दीपक था।
यूहन्ना 5:35
A lamp that burned and gave light - John 5:35
बहुत साल पहले जब मैं पहली बार नेपाल गया, उस वक्त मैं वहां किसी से परिचित नहीं था। मुम्बई से दिल्ली पहुंचा, और निराश होकर मैं वापस मुम्बई जाने की सोच ही रहा था, तो अचानक एक भाई का फोन आया, बोले आप नेपाल अवश्य जाईये।
खैर मैं काठमांडू पहुंचा, मैं एक वरिष्ठ मसीही व्यक्ति से मिला। उन्होंने ज्ञान सुनाया, और एक खास बात भी कही, कि किसी विदेशी को लेकर यदि हम गांव में जाते हैं तो गांव का कुत्ता भी उसे पहचान जाता है, और उसी पर भौंकता है।
उनका इशारा शायद गोरे लोगों से था, पर मैं भी कुछ सहम गया, क्योंकि मेरे पहनावे और शक्ल से अक्सर सड़कों और गांवों के कुत्ते नाराज रहते हैं।
बहरहाल उन्होंने मुझ से पूछा, आप का क्या कार्यक्रम है नेपाल में? मैंने जवाब दिया, कुछ भी नहीं, मुझे किसी ने निमंत्रण नहीं दिया है।
तब एक बार फिर मुझे ऊपर से नीचे तक देखने के बाद बोले, हम लोग ईस्ट नेपाल जा रहे हैं यूथ मीटिंग के लिए क्या आप चलोगे? मैं बहुत उत्साहित हो गया और कुर्सी से उठ बैठा, भाई मेरे पास तो टाइम ही टाइम है, मैं चलूंगा।
विराटनगर से आगे एक छोटे कस्बे में हम पहुंचे।
3 दिन की मीटिंग होगी। मेरे साथी किसी के घर में रहने चले गए। मैं भी चाहता था पर

उन्होंने मना कर दिया। मेरी व्यवस्था बस स्टैंड के पास एक गंदगी भरे छोटे से होटल में हो गई थी।

सारी रात नींद नहीं आयी, कई कारण थे, भयंकर गर्मी, ऊंची छत पर धीमी गति से चलता पंखा। मच्छरदानी के अंदर मैं, और बाहर मच्छरों का आतंक, कई घंटों तक बिजली गुल, मैं पसीने में नहाता हुआ।

कमरे से बाहर देर रात को निकला तो अनैतिक धंधों में लगे कुछ लोगों ने घूर कर देखा, तो मैं वापस अंदर आ गया।

शौचालय में न पानी था, न कोई साधन।

फिर भी मैं खुश था। क्यों?

इसलिए कि मैंने प्रभु से वादा किया था, चाहे कुछ भी हो जाये, कुछ भी मुश्किलात आयें, मैं शिकायत नहीं करूंगा।

(मुझे लगा, सारी रात मेरी परीक्षा हो रही थी)

इस बस्ती में आने के पहले, काठमांडू में रात को बाजार में घूमते समय में एक बुक स्टोर में गया था, वहां मुझे 'मदर टेरेसा' की एक किताब मिली। शीर्षक ''Love of Christ'' उसी रात मैंने वो किताब, पूरी पढ़ ली थी। उनका एक 'quote' था।

''Without our own suffering, any work would just be social work, very good and helpful but it would not be the work of Jesus Christ''

(बिना हमारे स्वयं कष्ट उठाये, हमारी कोई भी सेवा अच्छी समाज सेवा तो हो सकती है, लेकिन वो प्रभु यीशु की सेवा नही कहलाएगी)

उस छोटी बस्ती में बहुत जवानों ने प्रभु को जाना और मैं लौट आया।

प्रभु यीशु की गवाही यूहन्ना के बारे में यह थी कि वो खुद जलकर प्रकाश दे रहा था, सिर्फ एक दर्पण (mirror) की तरह प्रकाश रिफ्लेक्ट नहीं कर रहा था।

सच है, आखिर उसका सिर भी काट दिया गया।

इसीलिए प्रभु यीशु कहते हैं, ''जगत की ज्योति मैं हूँ''

और साथ ही ''तुम जगत की ज्योति हो''

यूहन्ना 8:12, मत्ती 5:14

प्रभु यीशु का जीवन कुर्बानी का था और उसके अनुयाइयों का जीवन भी कुर्बानी का ही होगा।

हमारी कुर्बानी के अंदर दुनिया को प्रभु यीशु नजर आयेंगे।

मत्ती 5:16 ''उसी प्रकार तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में हैं, बड़ाई करें।।''

मैं सबसे अधिक सम्मान उन प्रचारकों का करता हूँ जो सड़कों और गलियों में गवाही देते हैं। दुख उठाते हैं, जिन्हें भूख प्यास और गरीबी से वाकफियत है। जिन्हें शायद उनके शहर के बाहर कोई न जाने, उन्हें न अंग्रेजी आये, न ही कोई प्रचार करने किसी कन्वेंशन में बुलाये।

वे खुद जलते हैं और प्रकाश भी देते हैं।

आज सवाल है–

जल भी रहे हैं, या बस प्रकाश (ज्ञान) दे रहे हैं?

59. यदि नाश हो गई, तो हो गई

महारानी लक्ष्मीबाई, झांसी की रानी के नहीं....ये बोल...

महारानी एस्तेर बाई, फारस की रानी के हैं

तो ऐसी क्या बात हुई कि उस वक्त की सबसे खूबसूरत स्त्री, सबसे शक्तिशाली स्त्री और सबसे धनी स्त्री अपनी जान देने, खोने और मरने पर उतारू हो गई।

ये आज से 2500 साल पहले एक 20-22 साल उम्र की एक महारानी, जो उस समय के संसार की सबसे खूबसूरत स्त्री थी, जिसके महाराजा क्षयर्ष का साम्राज्य हिंदुस्तान से लेकर अफ्रीका के उत्तर तक 127 प्रान्तों में फैला हुआ था। एस्तेर 1

घटना आप को मालूम है, संक्षेप में

फारस के शहंशाह ने अपनी पहली रानी वशती को इसलिए क्रोध में आकर त्याग दिया था, क्योंकि उसने बड़े-बड़े अधिकारियों की दावत में आकर अपनी खूबसूरती का प्रदर्शन करने से इनकार कर दिया था।

तब खोज की गई, नई रानी के पद के लिए किसी योग्य और सुंदर स्त्री की, और तब एक अनाथ लड़की जिसकी देखभाल उसका चचेरा भाई करता था और जो यहूदी थे, और बहुत साल पहले बंधुए होकर यरूशलेम से लाये गए थे।

उसका असली नाम तो हदस्सा था, पर थोपा हुआ नाम एस्तेर था।

हामान जो राजा के बाद दूसरे नंबर का शासक था, उसने यहूदियों का नामोनिशान मिटाने का प्लान बनाया।

उसने शिकायत की, ''तेरे राज्य के सब प्रान्तों में रहने वाले देश देश के लोगों के मध्य में तितर-बितर और छिटकी हुई एक जाति है, जिसके नियम और सब लोगों के नियमों से भिन्न हैं; और वे राजा के कानून पर नहीं चलते, इसलिये उन्हें रहने देना राजा को लाभदायक नहीं है'' एस्तेर 3:8

राजा सहमत हुआ, तब मोर्देकै ने एस्तेर से कहा कि राजा के पास जाकर इस आज्ञा को रद्द करने को कहा जाए।
एस्तेर ने कहा, ''कि क्या पुरुष क्या स्त्री कोई क्यों न हो, जो आज्ञा बिना पाए भीतरी आंगन में राजा के पास जाएगा उसके मार डालने ही की आज्ञा है'' (एस्तेर 4:11)
तब मोर्दकै ने एस्तेर को जवाब दिया, ''कि तू मन ही मन यह विचार न कर, कि मैं ही राजभवन में रहने के कारण और सब यहूदियों में से बची रहूंगी।''
''क्योंकि जो तू इस समय चुपचाप रहे, तो और किसी न किसी उपाय से यहूदियों का छुटकारा और उद्धार हो जाएगा, परन्तु तू अपने पिता के घराने समेत नाश होगी।
''फिर क्या जाने तुझे ऐसे ही कठिन समय के लिये राजपद मिल गया हो?
एस्तेर ने जवाब दिया
जा कर शूशन के सब यहूदियों को इकट्ठा करो, और तुम सब मिलकर मेरे निमित्त उपवास करो, तीन दिन रात न तो कुछ खाओ, और न कुछ पीओ। और मैं भी अपनी सहेलियों सहित उसी रीति उपवास करूंगी। और ऐसी ही दशा में मैं नियम के विरुद्ध राजा के पास भीतर जाऊंगी।
''और यदि नाश हो गई तो हो गई''
–क्या किसी स्त्री के मुँह से आज तक इतने क्रांतिकारी व शक्तिशाली वचन सुने हैं?
सारी दुनिया अपनी जान बचाने की कोशिश में लगी है।
आज परमेश्वर हमारे मुंह से इस तरह के वचन सुनने की उम्मीद रखता है?
हमारा जीना महत्वपूर्ण नहीं है, दूसरों की जान बचाना जरूरी है (मुक्ति)
और यदि इस प्रयास में हम नाश हुए तो हो जाएं, वही कहें जो एस्तेर ने कहा।
और हाँ
''इस से बड़ा प्रेम किसी का नहीं, कि कोई अपने मित्रों के लिये अपना प्राण दे'' यूहन्ना 15:13
आज सवाल है–
क्या अपना जीवन दांव पर लगाने के लिए तैयार हैं?

60. घी तो वो था जो...

बड़े शहर के एक छोटे रेस्टॉरेन्ट में, दोपहर को मैं रोटी खा रहा था।
मेरे बाजू की एक टेबल पर एक देहाती सा व्यक्ति आकर बैठा। एक वेटर स्टील का गिलास खनखनाते हुए आया और टेप रिकॉर्डर की तरह बहुत तेजी से एक दर्जन सब्जियों

के विभिन्न कॉम्बिनेशन्स सुना दिये।
उस व्यक्ति ने बड़ी धीमी आवाज से कहा, ''भैया में कुछ समझ नहीं पाया हूँ। बस रोटी और हाफ दाल चलेगी, छिलके वाली भी चलेगी।''
वेटर ने कहा, ''मैं आपको अभी घी लगाकर रोटी खिलाऊंगा, बस 5 मिनट में।''
दाल रोटी खाने के बाद उस व्यक्ति से वेटर ने उत्साहपूर्वक सवाल किया, ''कैसी लगी हमारी घी की रोटियां?''
कुछ क्षण खामोश रहने के बाद जवाब आया, भैया, घी तो वो था जो मैंने गांव में खाया था, ये तो डालडा था।''
मेरे मन में विचार दौड़ गया।
आज कितने चर्च और लोग हैं जो नाम प्रभु यीशु का लेते हैं, पर माल नकली बेचते हैं।
''एक बार घी चखे व्यक्ति को कोई भी, कहीं भी, कभी भी, डालडे का धोखा नहीं दे सकता।''
''वे भक्ति का भेष तो धरेंगे, पर उस की शक्ति को न मानेंगे।'' 2 तीमुथियुस 3:5
आज सवाल है–
क्या आपका यीशु 'असली' वाला है?

61. पटेल जी का सवाल

'तुम लोग यीशु को भगवान बोलते हो पर अगर वो भगवान होते तो अपने आप को क्रूस पर चढ़ने से क्यों नही बचा पाए?' वो तुम्हें क्या बचाएंगे जो अपने आप को नहीं बचा पाए।
(यह सवाल आज से 2000 साल पहले भी उठा था, फेसबुक पर नहीं, पर क्रूस पर कीलों से जकड़े, लहूलुहान मरते प्रभु यीशु के सामने खड़े, जन समूह ने उठाया था-देखें आगे)
'लोग और सरदार भी ठट्ठा करके कहते थे, कि इसने औरों को बचाया, यदि यह परमेश्वर का मसीह है, और उसका चुना हुआ है, तो अपने आप को बचा ले।'
सिपाही भी ठट्ठा करके कहते थे, 'यदि तू यहूदियों का राजा है, तो अपने आप को बचा।'
'जो कुकर्मी लटकाए गए थे, उनमें से एक ने उस की निन्दा करके कहा, क्या तू मसीह नहीं तो फिर अपने आप को और हमें बचा।' (लूका 23:35-39)
पटेल भाई, हम भी आपके समान प्रभु यीशु को मात्र एक आम 'इंसान' या एक 'गुरु' या उस समय के धार्मिक ठेकेदारों की तरह 'धोखेबाज, ही मान लेते। यदि प्रभु यीशु मरने के बाद जीवित नहीं होते, और तब आप का कहना भी सच होता जो स्वयं कब्र में है

वह किसी को कैसे बचाये वो कैसे परमेश्वर कहलाते।
और सवाल ये भी है, कि क्या किसी 'झूठ' (प्रभु यीशु) के लिए भी कोई मरने को तैयार होता है।
रोमी सरकार और यहूदियों की धार्मिक सरकार ने मिलकर हज़ारों को आग में जलाया, जंगली जानवरों से रोम के कॉलोसिअम्स में मरवाया, घरों से शहरों से बेदखल किया, जेलों में भूखों मारा।
यदि प्रभु यीशु वो नहीं थे, जो उन्होंने दावा किया तो कौन अपनी जान देता। धन-संपत्ति, परिवार, मान-सम्मान खोता? आज भी प्रभु यीशु से मुक्ति पाए हज़ारों लोग इस संसार में जान देकर यीशु के पीछे चलने को तैयार हैं। और अपने शत्रुओं और सतानेवालों से प्रेम करते हैं।
(प्रभु यीशु के जीवन की हर भविष्यवाणी उनके आने के सैंकड़ों साल पहले बाइबिल में लिखी हुई थीं।)
प्रभु यीशु परमेश्वर का 'उपाय' हैं और आये ही इसलिए थे कि मनुष्य के पाप के लिए स्वयं बलिदान हों, और पवित्र लहू बहाकर मनुष्य की मुक्ति की कीमत अदा करें।
क्योंकि परमेश्वर का वचन कहता है, 'पाप की मजदूरी (परिणाम) मृत्यु है।'
पाप कर्म में ही नहीं हमारे विचारों में भी बीज की तरह होता है। हत्या और क्रोध बराबर है, चोरी और लालच बराबर है, व्यभिचार और वासना बराबर है। (मत्ती 5, 6, 7)

> ''पाप न कर्म से मिट सकते हैं, और न ही मुक्ति सोने, चांदी या धन से खरीदी जा सकती है। न ही जीवन किसी तीर्थयात्रा से बदलता है।''

इस कारण, ये आवश्यक हो गया कि परमेश्वर स्वयं उपाय निकाले, और हमारी मुक्ति की कीमत जो भी हो अदा करे। प्रभु यीशु का मनुष्य का रूप लेकर आना और परमेश्वर की सामर्थ और पवित्रता भी साथ रखने के कारण उन्हें एक और नाम ''इम्मानुएल'' दिया गया था जिसका अर्थ है 'परमेश्वर हमारे साथ'।
प्रभु यीशु का प्रेम इस हद तक था कि वो हमारे पापों का दंड खुद उठाते हैं और उस पर विश्वास करने वाले को मुक्ति देते हैं।
किसी धर्म में मुक्तिदाता नहीं है, पापियों का नाश करने ईश्वर आते हैं। पैसा, दान-दक्षिणा और तीर्थयात्रा मांगते हैं,
''प्रभु यीशु ने कोई धर्म की स्थापना नहीं करी, उसने इस संसार में 'परमेश्वर के राज्य' की स्थापना की।''

> परमेश्वर ने मनुष्य से प्रेम किया इसी कारण प्रभु यीशु ने क्रूस की मृत्यु को कबूल किया। (यूहन्ना 3:16)

लेकिन बात यहां खत्म नहीं हुई, तीसरे दिन मृत्यु से वे स्वयं जीवित हो गए और 40 दिन लोगों के बीच आत्मिक बातें सिखाते रहे और लोगों के देखते-देखते स्वर्ग पर उठा लिए गए।

आज आप यरुशलम शहर में जाकर उसकी खाली कब्र देख सकते हैं।

प्रभु यीशु ने अनेकों चमत्कार किये, और मरे हुओं को भी जीवित किया था, लेकिन इन सबसे बढ़कर वो हमें मृत्यु पर जय, यानि आत्मा की मुक्ति और शाश्वत जीवन देने आए थे। आज लाखों लोग हैं जिनके पाप से भरे, गंदे, शराबी, जुआरी, हत्यारे और क्रिमनल जीवन को बदलकर प्रभु यीशु ने अपना जीवन दिया है।

ये सभी प्रभु यीशु के ईश्वरत्व के गवाह हैं।

> प्रभु यीशु ने दावे से कहा, ''मार्ग, सत्य और जीवन में ही हूँ, बिना मेरे द्वारा कोई पिता परमेश्वर (मुक्ति) के पास नहीं पहुंच सकता।'' (यूहन्ना 14:6)

हमारी प्रार्थना है कि प्रभु यीशु आप को भी नया जीवन और मुक्ति दान दें।

आज सवाल है–

या तो प्रभु यीशु सर्वशक्तिमान परमेश्वर के पुत्र, सृष्टिकर्ता, जीवनदाता, मुक्तिदाता, तारणहार हैं जो अपने वचन की सामर्थ से सारे ब्रह्मांड को थामे हुए हैं

या

झूठे इंसानों, गुरुओं, ईश्वरों की कड़ी में एक और ...हैं।

62. प्याले में आखिर था क्या? प्याले में से पीने का अर्थ? प्याला पहले से क्यों देखा गया?

उस अंधेरी रात को, फसह का पर्व मनाकर वो अपने 11 चेलों के साथ गत्समने को गया (यहूदा पहले ही बाहर चला गया था) और उनसे कहा यहां जागते रहो, और प्रार्थना करो। उनसे कहा मेरा मन व्याकुल है.... मेरा जी बहुत उदास है, यहां तक कि मेरे प्राण निकला चाहते हैं। मत्ती 26:38

हजारों उसके अनुयायी अपने प्रभु के लिए आनेवाले दिनों में जान देंगे, और खून बहाएंगे, तो क्या उनका प्रभु यीशु स्वयं क्रूस की मृत्यु से डर रहा था?

हरगिज नहीं,

क्रूस की मृत्यु का डर नहीं था।

पर दर्द, पीड़ा और हृदय वेदना थी, संसार का सबसे बड़ा शारीरिक, भौतिक और आत्मिक युद्ध अकेले लड़ना है और यातनाएं सहकर और खून बहाकर पाप, मृत्यु और शैतान पर विजय प्राप्त करना है।

ऐसा युद्ध जो शारीरिक शक्ति से नहीं पर आत्मिक बल से ही जीता जाएगा।

वह सम्पूर्ण मनुष्य बनकर अपने ईश्वरीय अधिकारों को छोड़कर आया था

और अब

* सारा संसार उसका दुश्मन हो जाएगा

* शैतान का सरदार और उसकी सेना उससे लड़ेगी

* परमेश्वर भी उसे बलिवेदी पर छोड़ देगा।

* सारे संसार के पाप का दोष और दंड उसके ऊपर डाला जाएगा।

(यशायाह 53)

फिर वह थोड़ा और आगे बढ़कर (3 बार प्रार्थना)

* मुंह के बल गिरा

1 – और यह प्रार्थना करने लगा, कि हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह प्याला (कटोरा) मुझ से टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।

– फिर चेलों के पास आकर उन्हें सोते पाया,

पहली प्रार्थना और दूसरी प्रार्थना के बीच एक स्वर्गदूत भेजा गया, जिसने उसे सामर्थ दिया, जो जवाब भी लेकर आया? कि पिता चाहता है कि ये प्याला पिया जाए,

लूका 22:43

कैसी सामर्थ?

अवश्य ही पवित्र शास्त्र के वचन द्वारा उसे शक्ति दी गई होगी।

और इस कारण

2. प्रभु यीशु की दूसरी प्रार्थना बदल गयी,

यदि जैसा तू चाहता है कि मुझे ये प्याला पीना ही चाहिए तो मैं तेरी मर्जी करने के लिए तैयार हूं।

चेले फिर भी सोते रहे

3. तीसरी प्रार्थना भी दूसरी प्रार्थना की तरह थी।

प्याले (Cup) के पेय मिश्रण को पीना एक भयानक अनुभव है, चखना है, जिसका परिणाम मृत्यु है।

प्याले में आखिर था क्या? (A)

* उसका पीटा जाना, मुंह पर थप्पड़, मुंह पर थूका जाना, कोड़े पड़ना, बैंजनी वस्त्र, काँटों का ताज, क्रूस को ढोना, हाथों और पांवों में कीलों का ठोकना,
* आने जाने वाली जनता का घोर अपमान और गालियां
* और सबसे बड़ी बात पिता परमेश्वर से उसका जो रिश्ता था वो कुछ देर के लिए मानो टूट जाना और संसार में अंधकार का अधिकार
* और उस बीच उसके अपने चेलों का उसे छोड़कर भाग जाना और इनकार करना
* मनुष्य का अन्याय, क्रोध, झूठ, स्वार्थ और धोखा
* और पाप के विरुद्ध परमेश्वर का आक्रोश व क्रोध

प्याला पीने का अर्थ? (B)

यही कि, पिता मैं तैयार हूँ, परमेश्वर की मर्जी करने के लिए

प्याला पहले से क्यों देखा गया? (C)

1. इसलिए कि सब ये जानें कि प्रभु यीशु को धोखे से मृत्यु नहीं मिली, उसने पूरी जानकारी के साथ, सम्पूर्ण मन से पिता की मर्जी मनुष्यमात्र की मुक्ति के लिए करी।

2. उसने बचने का उपाय नहीं ढूंढ़ा, यदि वो चाहता तो गत्समने से भाग सकता था, अंधेरा था, और बाग शहर के बाहर था। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया

(Most important)

3. यदि बिना प्याले को देखे, बिना स्वेच्छा के, बिना कीमत को जाने प्रभु यीशु मृत्युदंड उठाते, तो उनकी कुर्बानी सिद्ध (perfect) नहीं होती और हमारी मुक्ति की कीमत नहीं होती।

– मैं अपना प्राण देता हूं।

कोई उसे मुझ से छीनता नहीं, वरन् मैं उसे आप ही देता हूं। यूहन्ना 10:17, 18

– हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया? तू मेरी पुकार से और मेरी सहायता करने से क्यों दूर रहता है? मेरा उद्धार कहां है? भजन संहिता 22:1

– जिस ने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा और सिंहासन पर परमेश्वर के दाहिने जा बैठा। इब्रानियों 12:2

आज सवाल है–
उसने तो प्याले को पिया,
पर आपका 'अपने प्याले' के विषय, क्या निर्णय है?

63. ज्ञान-कर्म या विश्वास

हाँ,
'सवालों का जवाब' आप को न मुक्ति दिलाएगा, न ईश्वर से मिलाएगा, और न ही स्वर्ग ले जाएगा।
- हमारे ऋषि, मुनि, जंगलों में पहाड़ों पर, तपस्या करके ईश्वर की खोज करते रहे हैं।
- कुछ लोग इंटरनेट पर ईश्वर को खोज रहे हैं।
दोनों में कोई अंतर नहीं है, क्योंकि दोनों परमेश्वर से नहीं मिल पायेंगे। बस शरीर का प्रयास है।
* 'ज्ञान-कर्म' - द्वारा - मनुष्य की शक्ति पर भरोसा किया जाता है।
* 'विश्वास' - द्वारा - परमेश्वर के वचन की शक्ति पर भरोसा किया जाता है।
बाइबिल में विश्वास की मांग क्यों है?
''और विश्वास बिना परमेश्वर को प्रसन्न करना असंभव है'' इब्रानियों 11:6
(Important - ध्यान से पढ़िए, कारण बताया गया है)
क्योंकि परमेश्वर
अपने मुंह के ''वचन'' से सृष्टि और ब्रह्मांड को बनाता है और चलाता, संभालता है। हमेशा ''वचन'' का ही प्रयोग करता है।
1. वचन - पर विश्वास ही किया जा सकता है, क्योंकि ये वस्तु-कर्म नहीं, वचन हैं। वचन को देखा नहीं जाता है, वचन पर विश्वास किया जाता है।
2. वस्तु-कर्म - यदि परमेश्वर हमें वचन न देकर ''वस्तु-कर्म'' यानि कोई मूर्तियां, कोई ताबीज, कोई तीर्थयात्राएं, कोई कर्म कांड, कोई विधि विधान देता, तो अवश्य वह फिर विश्वास नहीं पर ''ज्ञान-कर्म'' का रास्ता बन जाता।
यही कारण है,
''जीवित परमेश्वर का मुक्ति मार्ग विश्वास का मार्ग है, ज्ञान-कर्म का नहीं''

उदाहरण के लिए -

यदि साइकिल (ज्ञान, कर्म) जमीन पर चलती है तो उसका इस्तेमाल चाँद पर पहुंचने के लिए नहीं किया जा सकता है। रॉकेट (विश्वास) की आवश्यकता होगी।

जो काम केवल विश्वास से होता है, तो विश्वास करना ही पड़ेगा।

जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए। यूहन्ना 3:16

आज सवाल है–

आपने विश्वास किया है या ज्ञान-कर्म में भटके हैं?

◆◆◆◆